मूल्य २०.००

पंजी. संख्या-153/2016-17

वर्ष १

मार्च २०१७, विक्रमी सम्वत् २०७३-७४

सृष्टि संवत् १९६०९५३११७, दयानन्दाब्ध १९३

अंक ३

ओ३म्

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम ।।

सत्य और ज्ञान से भरपूर आर्यसमाज नोएडा का मुखपत्र

विश्ववारा संस्कृति

मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका

''सा प्रथमा संस्कृतिविश्ववारा''

नमो ब्रह्मणे नमस्ते वायो त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि तन्मामवतु तद्वक्तारमवतु।
अवतु माम् अवतु वक्तारम्।।

ईश्वर का व्यापक ज्ञानस्वरूप पूज्य और सहज स्वभाव जानकर हम उसकी उपासना करें तथा जीवन में सदा सत्य का आचरण करें।

सांसद मीनाक्षी लेखी के आवास पर आयोजित कार्यक्रम में मुख्य वक्ता आचार्य जयेन्द्र जी तथा अन्य

गुरुकुल महाविद्यालय सिकन्दराबाद का भव्य वार्षिकोत्सव

पंजी. संख्या–153/2016-17

ओ३म्

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम।।

विश्ववारा संस्कृति

मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका

वर्ष १ अंक ३ मार्च २०१७

सृष्टि संवत् १९६०८५३११७

संरक्षक : श्री आनन्द चौहान
श्री सुधीर सिंघल

अध्यक्ष : श्री रविन्द्र सेठ

संपादक मंडल

प्रबंध संपादक : मंत्री आर्य कै. अशोक गुलाटी

प्रधान सम्पादक : आचार्य डा. जयेन्द्र कुमार

उप–सम्पादक : श्रीमती मंजु नारंग,
श्रीमती गायत्री मीना

सह सम्पादक : डा. सुधीर (जे.एन.यू.)

सम्पादन सहयोग : श्रीमती शकुन्तला सेतिया
श्रीमती आदर्श बिश्नोई
श्रीमती मधु भसीन

परामर्श मण्डल : श्री विजेन्द्र कठपालिया
श्री अशोक आनन्द

व्यवस्थापक : श्री ओमकार शास्त्री
श्री मोहन प्रसाद उपाध्याय

प्रकाशक

आर्य समाज, बी 69, सेक्टर 33, नोएडा

दूरभाष : 0120-2505731

Website : www.aryasamajnoida.org

E-mail : info@aryasamajnoida33@gmail.com

मुद्रक

अंकोर पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, बी–66, संक्टर 6, नोएडा

मूल्य

एक प्रति : 20रु वार्षिक शुल्क : 250रु

पाँच वर्ष : 1100रु आजीवन : 2500रु

विदेश में वार्षिक शुल्क : 3100रु

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन की झलक	2
प्रबन्ध संपादक की कलम से	4
महर्षि के मानव–मात्र पर चार विशेष उपकार	5
शंका–क्या संसार में कहीं सुरक्षा नहीं है	7
जगत गुरू महर्षि दयानन्द जी के प्रति कवियों के उद्गार	8
जीवनबोध का पर्व शिवरात्रि	9
ईश्वर का स्वरूप	11
मन्त्रानुसार आचरण	13
आर्य समाज का प्रथम नियम	15
शिक्षा ही नहीं, सस्ंकार भी	17
ईश्वर उपासना की विधि	18
परमात्मा के गुण, कर्म और स्वभाव	19
महर्षि दयानन्द के प्रति	20
भारतीय नारी की चेतना	21
व्यवहार कैसा हो	22
स्वराज्य के प्रथम सन्देशवाहक – महर्षि दयानन्द सरस्वती	23
समाचार दर्पण	25

पाठकवृंद–कृपया स्वयं समाज एवं राष्ट्र के उत्थान के लिए विश्ववारा संस्कृति के आजीवन सदस्य बनकर जीवन पथ को पुष्पित, प्रफुल्लित और प्रमुदित करें। आपका चित्र पत्रिका में प्रकाशित होगा। आपके बहुमूल्य सुझावों का हम स्वागत करते हैं।

लेखकवृंद से अनुरोध है कि रचना मौलिक एवं अप्रकाशित हो, रचना का लेखन स्पष्ट और सुपाठ्य हो। दो प्रतियाँ उस रचनाकार को भेज दी जाएंगी, जिनकी रचना प्रकाशित हुई है।

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	:	5100 रुपये
कवर पृष्ठ नं–2	:	3100 रुपये
कवर पृष्ठ नं–3	:	2500 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	:	1000 रुपये
आधा पृष्ठ अंदर	:	600 रुपये

विश्ववारा संस्कृति में प्रकाशित रचना में व्यक्त विचार रचनाकार के अपने विचार हैं। सम्पादक मण्डल का उन विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं है। न्यायक्षेत्र नोएडा रहेगा।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन की झलक

– डॉ. जयेन्द्र कुमार

महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म १२ फरवरी टंकारा में सन् १८२४ में मोरबी (मुम्बई की मोरवी रियासत) के पास काठियावाड़ क्षेत्र (जिला राजकोट), गुजरात में हुआ था। उनके पिता का नाम कर्शनजी तिवारी और माँ का नाम यशोदाबाई था। उनके पिता एक कर–कलेक्टर होने के साथ ब्राह्मण परिवार के एक अमीर, समृद्ध और प्रभावशाली व्यक्ति थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती का असली नाम मूलशंकर था और उनका प्रारम्भिक जीवन बहुत आराम से बीता। आगे चलकर एक पण्डित बनने के लिए वे संस्कृत, वेद, शास्त्रों व अन्य धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन में लग गए।

उनके जीवन में ऐसी बहुत सी घटनाएं हुईं, जिन्होंने उन्हें हिन्दू धर्म की पारम्परिक मान्यताओं और ईश्वर के बारे में गंभीर प्रश्न पूछने के लिए विवश कर दिया। एक बार शिवरात्रि की घटना है, तब वे बालक ही थे। शिवरात्रि के उस दिन उनका पूरा परिवार रात्रि जागरण के लिए एक मन्दिर में ही रुका हुआ था। सारे परिवार के सो जाने के पश्चात् भी वे जागते रहे कि भगवान शिव आयेंगे और प्रसाद ग्रहण करेंगे। उन्होंने देखा कि शिवजी के लिए रखे भोग को चूहे खा रहे हैं। यह देख कर वे बहुत आश्चर्यचकित हुए और सोचने लगे कि जो ईश्वर स्वयं को चढ़ाये गये प्रसाद की रक्षा नहीं कर सकता वह मानवता की रक्षा क्या करेगा? इस बात पर उन्होंने अपने पिता से बहस की और तर्क दिया कि हमें ऐसे असहाय ईश्वर की उपासना नहीं करनी चाहिए।

अपनी छोटी बहन और चाचा की हैजे के कारण हुई मृत्यु से वे जीवन–मरण के अर्थ पर गहराई से सोचने लगे और ऐसे प्रश्न करने लगे जिससे उनके माता पिता चिन्तित रहने लगे। तब उनके माता–पिता ने उनका विवाह किशोरावस्था के प्रारम्भ में ही करने का निर्णय किया (१६ वीं सदी के आर्यावर्त में यह आम प्रथा थी)। लेकिन बालक मूलशंकर ने निश्चय किया कि विवाह उनके लिए नहीं बना है और वे १८४६ मे सत्य की खोज मे निकल पड़े।

डॉ. जयेन्द्र कुमार

महर्षि दयानन्द के हृदय में आदर्शवाद की उच्च भावना, यथार्थवादी मार्ग अपनाने की सहज प्रवृत्ति, मातृभूमि की नियति को नई दिशा देने का अदम्य उत्साह, धार्मिक–सामाजिक–आर्थिक व राजनैतिक दृष्टि से युगानुकूल चिन्तन करने की तीव्र इच्छा तथा भारतीय जनता में गौरवमय अतीत के प्रति निष्ठा जगाने की भावना थी। उन्होंने किसी के विरोध तथा निन्दा करने की परवाह किये बिना आर्यावर्त के हिन्दू समाज का कायाकल्प करना अपना ध्येय बना लिया था।

फाल्गुन कृष्ण संवत् १८६५ में शिवरात्रि के दिन उनके जीवन में नया मोड़ आया। उन्हें नया बोध हुआ। वे घर से निकल पड़े और यात्रा करते हुए वह गुरु विरजानन्द के पास पहुंचे। गुरुवर ने उन्हें पाणिनी व्याकरण,पातंजल–योगसूत्र तथा वेद–वेदांग का अध्ययन कराया। गुरु दक्षिणा में उन्होंने मांगा– विद्या को सफल कर दिखाओ, परोपकार करो, सत्य शास्त्रों का उद्धार करो, मत मतांतरों की अविद्या को मिटाओ, वेद के प्रकाश से इस अज्ञान रूपी अंधकार को दूर करो, वैदिक धर्म का आलोक सर्वत्र विकीर्ण करो। यही तुम्हारी गुरु दक्षिणा है। उन्होंने

आशीर्वाद दिया कि ईश्वर उनके पुरुषार्थ को सफल करे। उन्होंने अंतिम शिक्षा दी –मनुष्यकृत ग्रंथों में ईश्वर और ऋषियों की निंदा है, ऋषिकृत ग्रंथों में नहीं। वेद प्रमाण हैं। इस कसौटी को हाथ से न छोड़ना। वर्तमान में केवल पांडुरंग शास्त्री उनमें से एक है जो आर्य समाज की तरह काम कर रही है।

महर्षि दयानन्द ने अनेक स्थानों की यात्रा की। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने कुंभ के अवसर पर पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराई, अनेक शास्त्रार्थ किए। वे कलकत्ता में बाबू केशवचन्द्र सेन तथा देवेन्द्र नाथ ठाकुर के संपर्क में आए। यहीं से उन्होंने पूरे वस्त्र पहनना तथा आर्यभाषा हिन्दी में बोलना व लिखना प्रारंभ किया। यहीं उन्होंने तत्कालीन वायसराय को कहा था, विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है, स्वदेशी राज्य ही देश या राष्ट्र का भला कर सकता है। अतः महर्षि दयानन्द ने इन सभी समस्याओं को देखते हुये हुये चैत्र शुक्ल प्रतिपदा संवत् १६३२(सन् १८७५) को मुम्बई में आर्यसमाज की स्थापना की। उन्हें विश्वास था कि आर्यसमाज ही देश व राष्ट्र का भला कर सकता है। क्योंकि आर्यसमाज के नियम और सिद्धांत प्राणिमात्र के कल्याण के लिए हैं ।

''सर्वेषामेव दानानां ब्रह्मदानं विशिष्यते''

संसार में सबसे बड़ा दान विद्या का है।

इस दुनिया में यदि सूर्य न हो तो दुनिया, अन्धकारमय हो जाती है। ठीक इसी तरह मनुष्य का जीवन विद्या एवं ज्ञान के बिना अधूरा एवं अन्धकारपूर्ण होता है। विद्या से युक्त मनुष्य ही मनुष्यता को प्राप्त कर सकता है। विद्या से हीन मनुष्य पशुवत होता है।

विद्यार्थी जीवन ही जीवन की आधारशिला है मनुष्य अपने भावी जीवन के लिये इस काल में ही ज्ञान, आचार–विचार, संयम सत्य तथा अन्य सभी गुणों का संग्रह करता है। इसी समय व्यक्ति अपनी आध्यात्मिक, नैतिक, शारीरिक और मानसिक शक्तियों का विकास करता है। जरा विचार करके देखिये, साधन हीनता के कारण बहुत से बच्चों के जीवन में विद्यार्थी जीवन आता ही नहीं है और उनका समस्त जीवन अभिशप्त सा हो जाता है। आप हमारे द्वारा किये जा रहे प्रयास का एक छोटा सा हिस्सा बन सकते हैं तथा किसी एक बच्चे के जीवन को सौभाग्य युक्त कर सकते हैं। आपका सहयोग बालक के जीवन को विद्या की रोशनी से जगमग कर सकता है।

तो आइये हमारे साथ खड़े हो जाइये तथा उदारता से हाथ आगे बढाइये –मेरी प्रार्थना है कि बच्चे देश का भविष्य हैं। इस भविष्य को संवारने के लिये दिल खोलकर सहयोग प्रदान कीजिये।

आप सहयोग इस प्रकार कर सकते हैं–

- पूरे दिन का साधरण भोजन रू.4000
- मात्र एक समय का विशेष भोजन रू.6000 मात्र
- एक महीने का राशन रू.25000 मात्र
- एक बालक के संरक्षक बनकर रू.18000 मात्र देकर
- एक बालक का शिक्षा, भोजन एवं गणवेश वार्षिक रू.35000 मात्र

आप चैक या ड्राफ्ट आर्ष गुरूकुल शिक्षा प्रबन्ध समिति के नाम आर्यसमाज बी.–69 सैक्टर –33 नोएडा, के पते पर भेज सकते हैं। **समिति को दी जाने वाली राशि आयकर की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है।**

धन्यवाद!

आर्य कै. अशोक गुलाटी

महामंत्री

9871798221, 9555779591

प्रबन्ध संपादक की कलम से

विश्ववारा संस्कृति का तीसरा अंक सुधी पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करते हुये हमें हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। अनेक स्नेही मित्रों के शत् परामर्श प्राप्त हुये हैं। साथ ही उन द्वारा वार्षिक व आजीवन सदस्यता हेतु जानकारी की मांग की गई है। इस पत्रिका के कलेवर में कुछ संशोधन एवं परिवर्द्धन किया जा रहा है, आशा है आपको पसन्द आयेगा। अपने सुझाव हमें अवश्य भेजें।

पिछले माह में आप सभी ने महर्षि दयानन्द जयन्ती व ऋषि बोधोत्सव हर्षोल्लास से मनाया होगा? हमारा कर्त्तव्य है कि ऋषिवर के उपकारों को स्मरण करें, उनके जीवन का अनुगमन करें, तथा वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार–प्रसार के साथ उनको अपने जीवन व्यवहार में लाने के लिये आगे आयें। वैदिक धर्म का आधार चार वेद हैं, जिनमें समस्त मानव–मात्र के लिये ज्ञान–विज्ञान विद्यमान है। वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वैदिक धर्म सृष्टि के प्रारम्भ से है, जिसे परमात्मा ने चार ऋषियों के माध्यम से मानव मात्र के उपकार के लिये प्रदान किया। वेद में परमात्मा, आत्मा तथा जगत का वर्णन है। परमात्मा अवतार नहीं लेता, तीर्थ, गंगा आदि ध्यान करने से नहीं अपितु उत्तम कर्मों द्वारा जीवन में सुधार लाने में है। पंच महायज्ञ करना सभी आर्यों का कर्त्तव्य है। जीवित माता–पिता की सेवा ही सच्चा श्राद्ध है। मनुष्य को संस्कारशील बनाने के लिये महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा संस्कारों का परिपालन करना हमारा कर्त्तव्य है। छुआ–छूत, जाति–पाति, से दूर रहकर सभी को समान अवसर दिया जाना हमारा कर्त्तव्य है। स्वर्ग–नरक कोई अलग विशेष स्थान नहीं है। जीवन में सुख स्वर्ग है और दुःख नरक। माता–पिता, गुरू, विद्वान आदि महापुरूषों का जीवन अनुकरणीय है।

जो मनुष्य जैसा करता है वैसा फल पाता है। अतः हमें श्रेष्ठ कार्य करने चाहिये। वैदिक धर्म पुनर्जन्म को मानता है। नारी जाति का सम्मान करना हमारा कर्त्तव्य है। अतः संसार के सभी लोगों को श्रेष्ठ बनाने के लिये हमें वेद प्रचार पर बल देना चाहिये व आर्ष द्वारा अधूरे कार्यों को पूर्ण करने का प्रयास करें। यही ऋषि के प्रति सच्ची श्रद्धांजली है।

आर्य कै. अशोक गुलाटी
9871798221

पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी की पुण्यतिथि 19 मार्च को आर्यसमाज बी–69, सेक्टर–33, नोएडा में मनाई गई। पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी जी ने स्वामी दयानन्द जी से मिलने के पश्चात् उनकी रुग्णावस्था में स्वामी जी द्वारा "ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो, तूने अच्छी लीला की!" शरीर छोड़ने के दृष्टांत को देखकर पूर्ण आस्तिक बन गए व विचारों को सुनने के बाद 22 वर्ष की उम्र में अपने जीवन को ईश्वर भक्ति और देश के लिए समर्पित का दिया। हमें इनके जीवन से त्याग और बलिदान की शिक्षा लेनी चाहिए। पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी जी को शत्–शत् नमन्!

महर्षि के मानव-मात्र पर चार विशेष उपकार

–खुशहाल चन्द्र आर्य
(कोलकाता)

वैसे तो महर्षि दयानन्द के मानव–मात्र पर सैकडों नहीं सहस्त्रों उपकार हैं, जिनकी गिनती असम्भव है, इस लेख में केवल चार उपकारों का संक्षिप्त वर्णन करते हैं, जिनको हम लोगों ने अन्दाज पांच हजार बर्षो से प्रायः भुला दिया था जो इस भाँति है।

1. सबका एक धर्म, वैदिक धर्म ही है

सृष्टि के आरम्भ से लेकर महाभारत तक एक ही धर्म वैदिक को ही विश्व से सभी लोग मानते हैं अन्दाज पांच हजार वर्ष पहले महाभारत का भीषण युद्ध हुआ विश्व भर से सभी राजा, महाराजा, योद्धा, विद्वान व आचार्य युद्ध में काम आये। इस स्थिति में अविद्वानों, स्वार्थी लोग ही विद्वान समझे जाने लगे और उन स्वार्थी लोगों ने अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए वैदिक धर्म के स्थान पर अनेक मत–मतान्तर प्रचलित कर दिये, जिससे लोग धर्म भ्रमित हो गये और विश्व में अज्ञान, अन्धविश्वास व पाखण्ड का ही राज स्थापित हो गया और वैदिक धर्म प्रायः लुप्त हो गया और लोगों ने अन्धविश्वास पाखण्ड रूपी अधर्म को ही धर्म मान लिया। ऐसे समय में महर्षि दयानन्द अपने जीवन में कठोर तपस्या करके अनेक दुःखों व कष्टों को सहकर अपने सदगुरू स्वामी विरजानन्द की गोद लगभग तीन वर्ष बैठकर महाभाष्य व अष्टाध्यायी गहन अध्ययन करके वेदों के सही अर्थ निकालकर विश्व में वेदों का पुनः प्रकाश किया और करीब पांच हजार वर्षो से जो लोग वैदिक धर्म को भूल गये थे और अनेक मत–मतान्तरों में फँस गये थे, उनको पुनः वैदिक धर्म में लाकर उनके जीवन को सफल बनाने के लिए एवं उनके जीवन में सुख–शान्ति लाने के लिये जो वैदिक धर्म पर चलने से ही सम्भव है। उनको वैदिक धर्म पर चलने की प्रेरणा दी और मोक्ष प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त किया जो जीव का अन्तिम लक्ष्य है जिसकी प्राप्ति के लिये ईश्वर, जीव को मनुष्य योनि में भेजता है।

महर्षि दयानन्द के आने से पहले लोग अनेक मत–मतान्तरों में बँटे हुये थे उनके ग्रन्थ भी अलग–अलग थे जो सभी मनुष्यकृत थे। मनुष्य एक अल्पज्ञ प्राणी होने से उसके बनाये ग्रन्थ में भी अलगाववाद का होना आवश्यक है। परन्तु महर्षि ने वेदों को ईश्वरीय ज्ञान तथा सब सत्य विद्याओं की पुस्तक बतलाकर विश्व को यह बतलाया कि मानव–मात्र का एक ही धर्म वैदिक धर्म है और ग्रन्थ वेद है। इन्हीं को मानने से विश्व का कल्याण है। अन्यथा परस्पर के भेदभाव रहना निश्चित है।

2. सबका एक ही उपास्य देव ओ३म् है

महाभारत युद्ध से पहले एक ही धर्म वैदिक धर्म था। एक ही उपास्य देव ओ३म् था। महाभारत के बाद अज्ञानी स्वार्थी लोगों ने जहां अनेक मत–मतान्तर चला दिये। वहीं अनेक उपास्य देव भी चला दिये। अनेक मतों में शैव, वैष्णव व शाकृ मुख्य थे। शैवों ने शिव महादेव को वैष्णव ने विष्णु को शाकों ने दुर्गा, काली, भैरव आदि को अपना उपास्य देव मानना आरम्भ कर दिया। ब्रह्मा को सृष्टि कर्त्ता और विष्णु को पालन कर्त्ता और शिव को संहारकर्त्ता बतलाकर तीनों को उपास्य देव मान लिया। श्रीराम, कृष्ण को विष्णु का अबतार बतलाकर ईश्वर के रूप में ही उपास्य मानना आरम्भ कर दिया। इस प्रकार अनेक देवी–देवताओं की उपासना होनी आरम्भ हो गई। महर्षि दयानन्द ने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में यह लिखकर भ्रम समाप्त कर दिया कि उन सभी देवताओं के नाम ओ३म् के ही गुणों व कर्मो के नाम हैं। इसलिए एक ओ३म् की उपासना करने से ही सभी देवताओं की उपासना हो जाती है। ओ३म् ही सृष्टि को उत्पन्न करने वाला है, वही पालन करने वाला है और वही संहार करने वाला भी है। इसलिए ब्रह्मा, विष्णु और शिव तीनों ही देव ओ३म् में ही समाहित हो जाते हैं। सत्यार्थप्रकाश में ओ३म् के 109 नामों का वर्णन है। इसलिए महर्षि ने बताया कि किसी अन्य देवता की उपासना न

करके केवल ओ३म् की ही उपासना करनी चाहिए। महर्षि ने सभी मनुष्यों को जोड़ने का काम करके मनुष्य–मात्र पर बड़ा उपकार किया है।

3. एक ही नाम आर्य था

सृष्टि के आरम्भ में जितने भी मनुष्य थे वेद में उनको "आर्य" नाम से संबोधित किया है और वेदों में लिखा है। "अहं भूमिं अददाम आर्य्याय" इसका अर्थ है कि मैं ईश्वर, धर्मयुक्त गुण, कर्म, स्वभाव वालों के लिये पृथ्वी के राज्य को देता हूँ। यानि धर्मयुक्त गुण, कर्म, स्वभाव वाले आर्य ही इस पृथ्वी का आनन्द ले सकते हैं और वेदानुकूल चलते हुये अपने अन्तिम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त कर सकतें हैं। सृष्टि के आरम्भ में केवल दो किस्म के ही मनुष्य थे। गुण, कर्म स्वभाव से अच्छे व्यक्तियों को "आर्य" कहा जाता था और इसके विपरीत खराब चाल चलन व व्यवहार वालो को अनार्य कहा जाता था। अनाड़ी शब्द अनार्य का ही विकृत रुप है। महाभारत तक यही प्रथा चलती रही है। रामायण, महाभारत की फिल्मों में हमने देखा है कि सीता ने श्री राम को सदैव "आर्य पुत्र" और द्रौपदी ने अर्जुन को सदैव "आर्य पुत्र" के नाम से सम्बोधित किया है। महाभारत तक हमारा नाम आर्य और हमारे देश का नाम आर्यावर्त्त था। इसके बाद मुसलमानों ने सिन्धु नदी का अभ्रंश करके हमें हिन्दु और हमारे देश को हिन्दुस्तान कहना आरम्भ कर दिया। अंग्रेजों के आने पर हमें इंडियन और हमारे देश को इण्डिया कहना आरम्भ कर दिया। महर्षि दयानन्द का हमारे ऊपर बडा ऋण है कि उन्होनें हमारा प्राचीन नाम आर्य हमें याद दिला दिया। वेद प्रचार करने तथा परोपकारी कार्य को करने के लिये ही महर्षि ने "आर्यसमाज" की स्थापना सन् 1875 में मुम्बई में की। इससे भी विश्व भर में वेद प्रचारक तथा मानव कल्याण के कार्य काफी मात्रा में हो रहे हैं। ये भी महर्षि का हमारे ऊपर बहुत बडा उपकार है।

4. आर्य अभिवादन करने का एक तरीका "नमस्ते" है

वैदिक धर्म का प्रचार जब तक रहा तब तक सभी लोग परस्पर मिलने पर एक ही, अभिवादन "नमस्ते" करते थे। बाद में वैदिक धर्म प्रायः लुप्त होने से अज्ञानता वश श्रीराम और श्रीकृष्ण को स्वार्थी लोगों ने इनको ईश्वर का अवतार बताना आरम्भ कर दिया, तबसे जय राम, जय श्रीकृष्ण, राम–राम आदि अभिवादन के रूप में कहना आरम्भ कर दिया। मुसलमान भाई "मालिकुंअसलाम, असलाम मलिकुम अभिवादन में कहते हैं। अंग्रेज भाई 'गुड मॉर्निंग' गुड नाईट समय के अनुसार कहकर अभिवादन करते हैं। जो अपने हृदय का प्रेम प्रदर्शन करने का उपयुक्त तरीका नहीं जान पड़ता है। महर्षि ने वेदों के आधार पर वही प्राचीन अभिवादन शब्द 'नमस्ते' को उपयुक्त बताया और आर्य समाजियों को परस्पर मिलने पर नमस्ते का प्रयोग करने का आग्रह किया। आर्य जगत में एक वेदों के प्रकाण्ड विद्वान अयोध्या प्रसाद वैदिक रिसर्च स्कॉलर हुये हैं। जिनका अधिक जीवन कलकत्ता में ही बीता था उनको आर्यसमाज की तरफ से सन् 1933 में शिकागों में होने वाले विश्व धर्म सम्मेलन में भेजा गया था। वहां चर्चा का विषय अभिवादन के लिये उपयुक्त शब्द क्या होना चाहिए, यही था। सभी देश वालों ने अपने–अपने अभिवादन शब्द के सम्बन्ध में बताया अन्त में पं0 अयोध्या प्रसाद जी ने नमस्ते की इतनी सुन्दर व सटीक व्याख्या की, जिसको सभी देश वालों ने नमस्ते को ही अभिवादन के रूप में सबसे अधिक उपयुक्त समझा। और इसी को सभी ने स्वीकार कर लिया। तभी विश्वभर में नमस्ते का सबसे अधिक प्रचलन है। महर्षि का अभिवादन में नमस्ते का पुनः प्रचालन करवाना मनुष्य–मात्र पर एक बहुत बडा उपकार है।

शिक्षा केवल धनी लोगों के लिए नहीं होनी चाहिए, जिनके पास शिक्षा के लिए पर्याप्त साधन हैं। प्रत्युत शिक्षा उन निर्धन व अकिंचन व्यक्तियों के लिए भी आवश्यक है।

शंका-क्या संसार में कहीं सुरक्षा नहीं है। माँ की गोद में भी नहीं?

समाधान

संसार में कहीं भी सुरक्षा नहीं है। सुरक्षा केवल 'मोक्ष' में है तीन प्रकार से हम पर आपत्ति आ सकती है:–

(1) एक तो अपनी मूर्खता से, अपनी गलतियों से हम नुकसान उठा सकतें हैं। सड़क पर चलते हुए दुकान या बोर्ड देख रहें हैं। जिससे सड़क पर पड़े ऊँचे–नीचे पत्थरों पर हमने ध्यान नही दिया और पाँव टकराया, धड़ाम से गिरे, हाथ पाँव टूट गए किसकी गलती हुई? हमारी गलती हुई।

सड़क पर केले का छिलका आ गया हमने उस पर ध्यान नही दिया, पाँव पड़ गया, धड़ाम से गिर गए और कमर की हड्डी टूट गई। किसकी गलती से? हमारी गलती से

इस तरह एक क्षेत्र ऐसा है जहाँ हम अपनी गलतियों से नुकसान उठाते हैं। अपनी मूर्खता से जो गलतियाँ की, उससे जो दुःख मिला, उसका नाम है अध्यात्मिक दुःख।

(2) दूसरा क्षेत्र ऐसा है, जंहाँ दूसरे प्राणियों की गलतियों से हमें दुख भोगना पड़ता है। आपका प्रश्न है कि क्या माँ की गोद में हमें नुकसान हो सकता है? उत्तर है कि मां ने कोई गलत दवा या खान–पान में कुछ गलत चीज खा ली तो बच्चे को नुकसान हो गया। पिता की भूल से हमें नुकसान हो सकता है। किसी पड़ोस के बच्चे ने क्रिकेट में बालिंग की और उसकी बॉल हमारी आँख में लगी। पूरी आँख बेकार हो गयी। उसकी गलती से जीवन भर के लिए हमको नुकसान हो सकता है। सड़क पर चल रहे पीछे से एक कुत्ता आया और उसने टाँग काट ली। स्कूटर वाला कार वाला हमको ठोंक दे। हम ऐसे किसी गलत गुरु–आचार्य के पल्ले में पड़ गए और उसने हमे उल्टे पाठ पढा दिए और मोक्ष के मार्ग से कहीं और भटका दिया। उससे भी हमको नुकसान हो सकता है।

दूसरे व्यक्तियों के कारण से, सांप से, शेर आदि दूसरे प्राणियों के कारण से, इनके अन्याय से भी हमको दुख भोगने पड़ सकते हैं। इसे 'आधिभौतिक दुख कहते हैं।

(3) तीसरी है– प्राकृतिक दुर्घटनाएं। जैसे– भूकंप, तूफान, बाढ, आँधी, चक्रवात, सूखा, अकाल, वर्षा आदि। मकान गिर जाते हैं, बाढ का पानी भर जाता है। प्राकृतिक दुर्घटनाओं से भी हमको नुकसान उठाना पड़ता है तो दुख होता है। इसी का नाम है– 'आधिदैविक दुख'। उपरोक्त तीन प्रकार के दुख हैं। आपने जन्म ले लिया तो कही भी सुरक्षा नहीं है। कोई न कोई दुख आएगा ही।

महर्षि कपिल कहते हैं– 'कुत्रापि कोऽपि सुखी न'। सीधा सरल वाक्य है। धरती पर कोई भी व्यक्ति कहीं भी पूरा सुखी नहीं है। एक सुख मिलता है उसके पीछे चार दुःख आते हैं तो सौदा मंहगा पड़ता है। चार रुपए की खरीदी और बिक्री मूल्य एक रुपया। ये कैसा घाटे वाला व्यापार है। सुख मिलता है एक, और दुख मिलते हैं चार। इसलिए चारो ओर दुख ही दुख हैं। धरती पर कोई भी पूर्ण सुखी नहीं है। दार्शनिक दृष्टि से सभी दुःखी हैं दर्शन शास्त्र मानसिक सुख–दुख की बात कर रहा है। मन में अविद्या, क्रोध, मोह, लोभ आदि के कारण सारे लोग दुःखी हैं इस दृष्टि से दुःख अधिक हैं।

'सत्यार्थ प्रकाश' में महर्षि दयानन्द जी ने लिखा है कि संसार में सुख अधिक है। उनका तात्पर्य है कि शारीरिक स्तर पर, बाह्य स्तर पर सुख अधिक है। महर्षि दयानन्द बाह्य स्तर की बात कर रहे हैं और महर्षि कपिल, महर्षि पतंजली आंतरिक स्तर की बात कर रहे हैं । बाह्य स्तर पर तो सुख अधिक है और मानसिक स्तर पर दुःख अधिक है। शरीर और मानसिक स्तर की तुलना करते हैं तो मानसिक ज्यादा हानिकारक है। और मानसिक स्तर पर दुःख अधिक है। इसलिए कपिल मुनि कहते हैं– तीनों प्रकार के दुखों से छूटो।

यह मनुष्य का सबसे ऊँचा लक्ष्य है। पूरी सुरक्षा केवल मोक्ष में है। इसलिए शीघ्र ही मोक्ष में प्रस्थान करो।

जगत गुरू महर्षि दयानन्द जी के प्रति कवियों के उद्गार

धन्यञ्च प्राज्ञमूर्धन्यं दयानन्द दयाधनम्।
स्वामिनं तमहं वन्दे वारं वारञ्च सादरम्।।
— आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

भूल में पड़े, भूल को समझ, भूल न पाते।
देख–देख कर दुःखी जात, दुख देख न पाते।।
कर्म–भूमि पर था न कर्म का बहता सोता।
धर्म–धर्म कह धर्म–मर्म का ज्ञान न होता।।
उस काल अलौकिक लोक में हमें अलौकिक बल दिया।
आ दयानन्द आलोक ने अलोकित भूतल किया।।
— कवि सम्राट पं. अयोध्यासिंह उपाध्याय

जो न हटा मुख फेर, बढा जीवनभर आगे।
जिसका साहस हेर, विघ्न भय संकट भागे।।
सबल सत्य की हार, अनृत की जीत न होगी।
ऐसे प्रबल विचार, सहित जो विचरा योगी।।
उस दयानन्द मुनिराज का, प्रकृत पाठ जनता पढे।
प्रभू शंकर आर्य समाज का, वैदिक बल गौरव बढे।।
— महाकवि पं. नाथूराम शर्मा 'शंकर'

अतुल शान्त, निवृत्ति परायण परम भक्त करूणा निधान के,
उत्कट देश भक्त, युग त्राता, दयानन्द हैं धनी ज्ञान के।
कर्मवीर, निर्भीक सिंह सम, किंचित् भूखे नहीं मान के,
शिश्नोदारता के कट्टर रिपु, मूर्तरूप हैं स्वाभिमान के।।
— पौराणिक पण्डित ब्रह्मानन्द "बन्धु"

दशा जिसने भारत की बिगडी सुधारी।
किये एक जिसने शिखा सूत्र धारी।।
धरमवीर, सेवाव्रती, क्रान्तिकारी।
बनाये थे जिसने, बहुत नर व नारी।।
किया जिसने फिर जागृति का सवेरा।
वही पूज्य गुरू है दयानन्द मेरा।।
— कविरत्न पं. प्रकाशचन्द्र

दयानन्द की ज्योति जगत में,
जगी, जग रही और जगेगी।
अभिनव भारत का निर्माता,
जाति, जननी का भाग्य विधाता,
प्राणी मात्र का संकट त्राता,
फहरी धर्म ध्वजा फहरेगी—
जगी जग रही और जगेगी।
— पं. हरिशंकर शर्मा 'कविरत्न'

व्रती, ब्रह्मचारी, समुद्धार–कारी,
सदा शंकरी, वेद विद्या प्रचारी।
महा–वंचकी–वृत्ति–धाती, कुठारी
नमस्ते दयानन्द! आनन्दकारी।।
— कविवर पं. चेतराम शर्मा

यदि परमात्मा सृष्टि के आदि में वेदों का उपदेश न करता तो आज तक किसी मनुष्य को धर्मादि पदार्थों का यथार्थ ज्ञान न होता।

—स्वामी दयानन्द सरस्वती

जीवनबोध का पर्व शिवरात्रि

–डॉ. महेश विद्यालंकार

शिवरात्रि भारत का धार्मिक, सांस्कृतिक और महान प्रेरक पर्व है। इसका सम्बन्ध मंगलकारी शिव भगवान की पूजा उपासना व्रत एवं संकल्प भावना से है। सभी धार्मिक आस्था वाले इस पर्व को किसी न किसी रुप में बड़ी श्रद्धा से मनाते हैं। आज जो शिवरात्री का आध्यात्मिक, सांस्कृतिक तथा लोक में प्रचिलत स्वरुप मिलता हैं वह मात्र बाह्य आडम्बर और रस्म रिवाज तक सीमित हो रहा है। सत्य हैं कि शिवरात्री आत्मबोध, सत्यबोध तथा जीवन बोध का पर्व हैं। पर्व जगाने, सम्भलने व दिशाबोध कराने आते हैं । आज पर्वों की मूल चेतना, उद्देश्य, सन्देश तथा सत्यस्वरुप विकृत हो रहा है। पर्वों से हम जीवन एवं जगत के लिये कुछ प्रेरणा व सीख नहीं ले पा रहे हैं। शिवरात्रि पर्व परमात्मा के सत्य स्वरूप और जीवन लक्ष्य का संदेश देने प्रतिवर्ष आता है। कल्याणकारी शिव जो बोध कराये उससे मिलने की भावना जागृत करें, वही सच्ची शिवरात्रि है। बाकी तो संसारी और भोगरात्रियाँ और रात्रियाँ हमें सुलाने आती हैं। शिवरात्रि जगाने और जीवनबोध कराने आती है। यह आत्म बोध का सार्थक पर्व है।

आर्यसमाज के जन्म निर्माण और इतिहास में शिवरात्री की अति आवश्यक भूमिका रही है। संसार की साधारण घटनायें महापुरूष के जीवन में परिवर्तन, मोड़ और क्रान्ति ला देती हैं। मूलशंकर के जीवन में शिवरात्रि सत्य बोध और वैचारिक क्रान्ति लेकर आयी। वे शिवरात्रि की रात जागने के बाद जीवनभर चैन से नहीं सोये। यदि मूलशंकर के जीवन में सच्ची शिवरात्रि न आती तो वे दयानन्द न बनते। ऋषि दयानन्द न होते तो आर्यसमाज न होता। यदि आर्यसमाज न होता तो विस्मृत वैदिक धर्म, वेद, यज्ञ, समाज–सुधार आदि का सत्य स्वरूप कौन दिखाता? ऋषि ने अपना सम्पूर्ण जीवन वेदोद्धार, देश, धर्म, मानवता तथा संसार के उपकार के लिये आहुत कर दिया। ऐसा अनोखा निराला विलक्षण सत्य का शोधक, सत्य वक्ता, सत्य का प्रचारक और सत्य पर शहीद होने वाला महापुरूष दुनिया में कोई दूसरा नहीं हुआ है। ऋषि की विशेषताओं और उपकारों का जितना गुणगान किया जाए उतना कम है। सत्य की ऋषि के ज्ञान बोध का पर्व शिवरात्रि हम सब ऋषि भक्तों, आर्य समाजियों, सभा संगठनों, संस्थाओं आदि के अधिकारियों के लिये आत्म–चिन्तन, आत्म–विश्लेषण, कर्तव्य–बोध, सत्य–धर्म आदि के चिन्तन मनन का अवसर है। क्या खोया? क्या पाया? ऋषि की विचार धारा के प्रचार और प्रसार के लिये हम क्या कर रहे हैं। ऐसे अवसर सोचने, अपने को बदलने व्रत तथा संकल्प के लिये आते हैं। संसार की सबसे बड़ी मूल्यवान महत्त्वपूर्ण चीज जीवन है, हम अपने आत्म कल्याण, आत्म उत्थान और जीवन निर्माण के लिये धार्मिक स्थानों, सत्य ग्रन्थों एवं महापुरूषों के साथ जुड़ते हैं। यदि हमारे जीवन में सत्य बोध नहीं हुआ, हमने अपने जीवन की बुराईयों, दुर्गुणों, दोषों आदि को दूर नहीं किया, पशुता से देवत्व की प्रवृत्ति नहीं बनायी, जीवन को धार्मिकता, आध्यात्मिकता तथा प्रभु के साथ नहीं जोड़ा तो सत्य है कि हमने शिवरात्रि बहिर्जगत में मनाई है। अर्न्तजगत में अँधेरा, अज्ञान,स्वार्थ, अहंकार, पशुता आदि भरी रही तो समझना चाहिये कि हम अपने को धोखे और अंधेरे में रख रहे हैं। इतिहास साक्षी है जो अन्दर से जागे हैं, उनके जीवन बदल गये हैं। जीवन का कायाकल्प हो गया। पतित जीवन तपस्वी बन गये। भोगी, विलासी, दुर्व्यसनी मुंशीराम तपस्वी, त्यागी, बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द बन गये। भोग–विलास तथा वासनाओं के कीचड़ में फंसे अमीचंद अमूल्य हीरा बन गये। गुरूदत्त नास्तिक से आस्तिक बन गये। यह सम्भव तब हुआ जब उनके ह्रदय में ज्ञान की अग्नि प्रज्वलित हुई। हमारे ज्ञान, विवेक तथा जीवन में परिवर्तन, सुधार व आकर्षण उत्पन्न नहीं हो पा रहा है। मूल में भूल हो रही है। हमारे जीवन नहीं बन पा रहे। जीवन से ही दूसरे के जीवन की ज्योति जलती है। वेद का अमर संदेश है– यो जागार तं ऋचा कामयन्ते" जो जागता है उसे ही सत्य ज्ञान तथा आत्म ज्ञान प्राप्त होता है। शिवरात्रि आत्मज्ञान का पर्व है। सत्य को जानने और खोजने का पर्व है। शिवरात्रि सच्चे शिव के साथ जुड़ने का संदेश देती है। जड़ पूजा से चेतन पूजा की ओर चलो। बाहर की दुनिया से अन्दर की दुनिया में आओ।

उठो! जागो। अपने जीवन तथा जगत को संभालो। जीवन बड़ी तेजी से व्यर्थ की बातों, विवादों, उलझनों और भोगों में गुजरा जा रहा है। मानव जीवन को प्राप्त करने के बाद भी जीवन को उद्‌देश्यहीन बनाकर जिया तो उपनिषद के शब्दों में महती विनिष्ठ,इससे बढकर जीवन की हानि व विनाश और कुछ भी नहीं है! आज हम इतने भौतिकवादी, भोगवादी तथा अज्ञानी हो रहे हैं कि पर्व, वेदकथाएं, उपदेश, प्रवचन, सम्मेलन आदि आते हैं इनमें बाह्य धूम, दिखावट, बनावट, प्रदर्शन आदि खूब होता है, आत्मचेतना, आत्मसुधार तथा जनकल्याण का भाव जागृत दिखाई नहीं देता है। भोजन वही सार्थक होता है जो शरीर को लग जाए। उपदेश वही माना जाता है जो जीवन विचार तथा आचरण बदल दे। शिवरात्री पूछ रही है– मूलशंकर को तो बोध हो गया, तुम्हें कब बोध होगा? हम कब अपना बोध दिवस मनायेगे। जिस दिन हम अपना बोध दिवस मनाएंगे। उसी दिन हमारी सच्ची शिवरात्री होगी।

यह बोधोत्सव का पर्व हमें जगानें, संभलनें, कर्तव्य बोध तथा कुछ करने के लिए प्रेरित कर रहा है। आर्यो! ऋषिभक्तों! उठो! जागो! अपने को सभालों! संगठित हो जाओ। मिलकर बैठो, सोचो और मिलकर चलो। अपने कर्तव्य और दायित्व को समझो, अपनी विरासत और वसीयत संभालो। ऋषि के जीवन से प्रेरणा लो। ऐसा प्रेरक, आदर्श, सर्वस्व स्वामी, और आजीवन विषपायी महापुरुष इतिहास में न मिलेगा। संसार हमारी ओर देख रहा है। हम व्यर्थ के विवादों में क्यों उलझ रहे हैं। विवादों को छोड़ों संवादों को पकड़ो। ऋषि ने जिस उद्देश्य प्रयोजन और कार्यों के लिए आर्य समाज बनाया था उस पर गंभीरता से चिंतन मनन और कार्य करने की प्रेरणा शिवरात्री दे रही है। क्या हम शिवरात्री का संदेश सुनकर अपने जीवन व कर्तव्य का बोध करेंगे? क्या शिवरात्री पर आत्मचिंतन करके ऋषि मिशन के लिए ईमानदारी, व सेवाभाव से सहयोगी बनने का संकल्प लेंगें? तभी सच्चे अर्थ में शिवरात्री मनाने की उपयोगिता सार्थकता और व्यवहारिकता है। यही शिवरात्री का संदेश है।

ईश्वर का स्वरूप

-डॉ. विनय विद्यालंकार

संसार में लगभग 300 विचार धाराएं अस्तित्व में हैं जो सभी ईश्वर अथवा किसी न किसी चेतन सर्वोच्च सत्ता के अस्तित्व को स्वीकार करती है, सभी के अनुयायी भी हैं, सभी का केन्द्र ईश्वर एवं उसके नियम हैं। परन्तु ईश्वर के विषय में भिन्न–भिन्न विचार धाराओं को स्थापित करने वालें महापुरुष के मत भिन्न–भिन्न हैं। इसी कारण व्यक्तियों तथा सम्प्रदायों व्यवहारिक जीवन में है और यही भिन्नता अनेक प्रकार के कलह, वैमनस्यता तथा शत्रुता की पराकाष्ठा तक पहुंच जाती हैं। सभी ईश्वर विश्वासी आस्तिक मत स्वयं को शांति स्थापक सिद्ध करने का प्रयास भी करते हैं, मैं कहूँ तो दावा भी करते हैं फिर भी उत्तरोत्तर वह शत्रुता युद्ध का स्वरुप लेती जा रही है। सच्ची शांति की स्थापना आस्थिकता के यथार्थ भावो से ही हो सकती है ऐसा मेरा मत है। इस विषय में गोष्ठी के विचारणीय तीन बिन्दुओं–ईश्वर कैसा है? कहां रहता है? व क्या करता है? पर संसार के प्रचीनतम सनातन वैदिक मत के आलोक में विचार किया जाना अपेक्षित है–ईश्वर कैसा है? ईश्वर के स्वरुप पर प्रश्न आते ही हैं–अनेक उप प्रश्न उपस्थित होते हैं–वह साकार व निराकार, सगुण व निर्गुण है, शान्त है या उन्नत, वह अवतार लेता है या अजन्मा है, ईश्वर एक है व अनेक?

साकार व निराकार–सृष्टि के दो रूप हैं एक साकार व एक निराकार, पानी जब भाप बनकर उड़ जाता है तो निराकार हो जाता है परन्तु जब भाप जमकर बादल बन जाते हैं तो साकार हो जाते हैं, वायु निराकार है क्योंकि उसे देख नहीं सकते। आकाश निराकार है। अब प्रश्न होता है कि ईश्वर साकार है या निराकार। साकार वस्तु स्थूल होती है, जो स्थूल वस्तुऐं हैं। वे सूक्ष्म में व्यापक नहीं हो सकतीं। यदि ईश्वर को सर्वव्यापक माना जायेगा तो उसे साकार नहीं माना जा सकता। वेद मन्त्र कहता है कि यह समस्त जगत ईश्वर से आच्छादित है। वह कण–कण में व्यापक है। सूक्ष्म परमाणु के अन्दर भी जो उत्प्रेरक है वही ईश्वर है। ओं ईसावास्यमिदं सर्वं यत्किंचित् जगत्यां जगत। यजु. 40।1।। ईश्वर की सर्वव्यापकता ही उसे सृष्टि कर्त्ता सिद्ध करती है यदि कर्त्ता नहीं मानते तो वह ईश्वर, ईश्वर ही नहीं हुआ और आस्तिकता की भाँति धर्म से गिरकर चकनाचूर हो जाती है। इसलिए आस्तिकों का ईश्वर को साकार मानना स्वयं अपने मत का खण्डन करना है और नास्तिकों के उपहास कारण बनना है। जिन नियमों में निबद्ध होकर सृष्टि संचालन हो रहा है, वे नियम यदि सूक्ष्म हैं तो नियामक उनसे भी अतिसूक्ष्म होना सिद्ध होता है।

साकार निर्बल होता है–ईश्वर को साकार सिद्ध करने वालों का तर्क है कि यदि वह साकार नहीं होगा तो शक्तिशाली कैसे होगा। उसे सर्वशक्तिमान होने के लिए साकार भी होना चाहिए जबकि दार्शनिक जगत इस तथ्य से सुपरिचित है कि साकार पर निराकार शासन करता है। निराकार पर साकार कभी शासन नहीं कर सकता है। शरीर साकार है जबकि आत्मा निराकार है, जो हाथ को जब चाहे जिधर चाहे चलाती है, कभी लिखता हूँ, कभी खाता हूँ, परन्तु उस शक्ति के अभाव में हाथ साकार होते हुये भी कुछ नहीं कर सकता है। अतः स्थूल वस्तुओं को शक्ति सम्पन्न समझना और सूक्ष्म को शक्ति रहित समझना भारी भूल है। यदि ईश्वर सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापक है तो उसे अवश्य ही निराकार होना चाहिए।

सगुण अथवा निर्गुण–ईश्वर के स्वरूप को लेकर दो सम्प्रदाय बन गये हैं। सगुणवादी और निर्गुणवादी इसका समाधान वेदों के आलोक में महर्षि दयानन्द जी ने किया और कहा वह ईश्वर सगुण भी है और निर्गुण भी है।" वह परमात्मा सब में व्यापक, शीघ्रकारी, अनन्त बलवान, जो शुद्ध सर्वज्ञ, सबका अन्तर्यामी, सर्वोपरि विराजमान, सनातन, स्वयं सिद्ध, आदि गुणों की अपेक्षा सगुण है तथा अकायम, अव्रणम्, अस्नाविरम्–अपापविद्धम् अर्थात् वह

शरीर धारण नहीं करता जिसमें छिद्र नहीं होता, नाड़ी आदि के बन्धन में न आता और कभी पापाचरण नहीं करता जिसमें क्लेश, अज्ञान कभी न होता। इनकी दृष्टि वह निर्गुण भी है।

सादि व अनादि–ईश्वर अनादि है क्योंकि उसका कोई आदि कारण नहीं है, समय नहीं है। 'यस्मात् पूर्वम् नास्ति परम यास्ति स आदिरित्युच्यते न विद्यते आदि कारणं यस्य सोऽनादिहीश्वरः। जिससे पूर्व कुछ न हो और परे हो उसको आदि कहते हैं जिसका आदि कारण और दूसरा नही है इसलिए परमेश्वर अनादि है। (सत्यार्थ प्रकाश)

वह अनन्त है– 'न विद्यते अन्तोऽवधिर्मर्यादा यस्य तदनन्तम' जिसका अन्त अवधि मर्यादा अर्थात् इतना लम्बा चौड़ा छोटा बड़ा ऐसा परिमाण नही है। 'सत्यं ज्ञानामनन्तं ब्रह्म' (तैतिरोयोपनिषद)

क्या ईश्वर को अवतार लेने की आवश्यकता है?– वेद की मान्यता है वह कदापि अवतरित नहीं होता– 'अजएकपात' सपर्य्यगाच्छुक्रमकायम्' ये यजुर्वेद की सूक्तियाँ हैं। 'यदा–यदा हि धर्मस्य...................।।' आदि श्रीकृष्ण जी जैसे धर्मात्मा पुरूषों की उक्ति महान आत्माओं के जन्म लेने के सन्दर्भ में हो सकती है वहाँ परमात्मा विनियोग उक्ति नहीं है।

हमारे कुछ विचारक 'कंस', रावण आदि राक्षसों के विनाश हेतु ईश्वर अवतार की कल्पना करते हैं जो अहेतुक है क्योंकि ऋषि दयानन्द जी ने लिखा है" प्रथम जो जन्मा है वह अवश्य ही मृत्यु को प्राप्त होता है, जो ईश्वर शरीर धारण किये बिना जगत की उत्पत्ति स्थिति प्रलय करता है। उसके सामने कंस, रावण आदि एक कीडी के समान भी नहीं है। वह सर्वव्यापक होने से कंस, रावण आदि के शरीर में भी परिपूर्ण हो रहा है जब चाहे उसी समय मर्मच्छेदन कर विनाश कर सकता है। भला इस अनन्त गुण–कर्म–स्वभाव युक्त परमात्मा को एक श्रुद्र जीव के मारने के लिये जन्म–मरण युक्त कहने वालों को मूर्खपन से अन्य कुछ विशेष उपमा मिल सकती है? (सत्यार्थप्रकाश सप्तंमुल्लास)

ईश्वर एक है व अनेक– यदि हम सृष्टि की प्रक्रिया पर दृष्टिपात करते हैं तो ज्ञात होता है कि पूरी सृष्टि नियमों में बंधी हुई है, जैसे मुख्य नियमों के अधीन कतिपय लघु नियम हैं। ग्रहों, उपग्रहों, नक्षत्रों आदि की स्थिति बडा नियम है तो उसके अधीन अन्न आदि की उत्पत्ति हेतु प्राकृतिक वातावरण के नियम हैं उदाहरण के लिये भारत में 'अ' नाम व्यक्ति 'व' नामक वातावरण में गेहूँ उत्पन्न करता है तो आस्ट्रेलिया में बैठे 'स' नामक व्यक्ति की गेहूँ उत्पन्न करने के लिये 'व' नामक वातावरण ही चाहिये। अन्ततः यह सृष्टि नियम के अधीन है, इसी नियम के अधीन है। इसी नियम को वेद 'ऋत' कहा है। यह 'ऋत' एक है कई नहीं। छोटे–छोटे नियम शास्त्र या साइंस अलग–अलग बना है। जैसे वनस्पति शास्त्र के नियम, रसायन शास्त्र के नियम, दर्शन शास्त्र, ज्योतिष आदि के नियम। जिस प्रकार एक गणित शास्त्र के अन्तर्गत छोटे–छोटे शास्त्र हैं– गणित, बीजगणित, अंकगणित, रेखागणित, त्रिकोणमिति आदि उसी प्रकार बडे शास्त्र भी ऋत के अधीन हैं और यह 'ऋत' के अधीन उस अपार बुद्धि में निवास करता है जिसे ईश्वर कहा जाता है। ऋग्वेद में यह मन्त्र आता है, 'ऋत च सत्यंचाभीद्धातपसोऽध्यजायत'। ऋग. 10।190।। इस ऋत को रखने वाली विशाल बुद्धि का नाम अभीद्ध है तथा सत्य को देखने वाली शक्ति का नाम तपस् है।

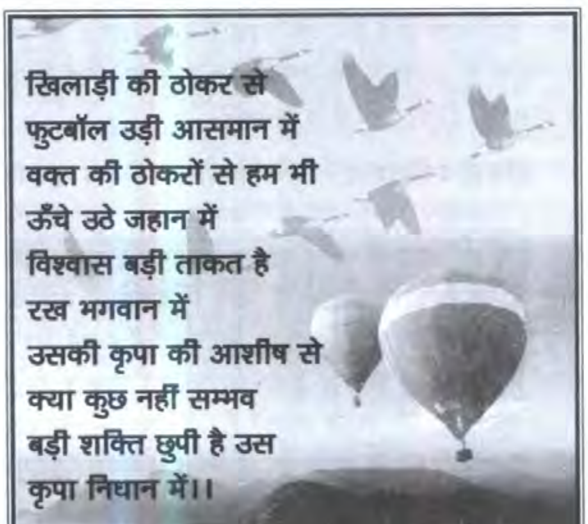

मन्त्रानुसार आचरण

ओ३म्।
नकिर्देवा मिनीमसि नकिरा योपयामसि मन्त्रश्रुत्यं चरामसि।
पक्षेभिरपिकक्षेभिरत्राभि सं रभामहे।

(ऋ. 10–134–7)

शब्दार्थ

हे देवाः दिव्यगुण सम्पन्न आत्माओ! नकिः न तो हम मिनीमसि हिंसा करते हैं, घातपात करते हैं और नकिः न ही आ+योपयामसि फूट डालते हैं, वरन् मन्त्र–श्रुत्यम् मन्त्र के श्रवणानुसार चरामसि आचरण करते हैं, चलते हैं, कक्षेभिः तिनको के समान तुच्छ पक्षेभिः साथियों के साथ अपि सम् एक होकर, एकमत होकर, मिलकर अत्र इस जगत में अभिरभामहे वेगपूर्वक कार्य करतें हैं।

व्याख्या

वेद हिंसा, घतपात का अत्यंत विरोधी। साधारण जीवन में हिंसा वेद को अभिमत नही है वास्तव में हिंसा प्रायः संपूर्ण दुर्गुणों की खान है। इसलिए ऋषियों ने यमों में अहिंसा को प्रथम स्थान दिया है योगियों का सिद्धांत है कि सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह अहिंसा को ही उज्वल और परिष्कृत करने के लिए है।

मनुष्य सामाजिक प्राणी है इसे पनी जीवन यात्रा चलाने के लिए समाज बनाकर रहना होता है समाज निर्माण का प्रयोजन मनुष्य का सर्वविद् विकास है उसके लिए कुछ नियम, विधान बनाने पड़ते हैं ताकि समाज का संचालन भलीभंति होता रहे। विचित्र रुपाः खलु चित्तवृत्तयः (मनुष्य के न की वृत्तियां विचित्र होती हैं) के अनुसार कई कुटिल प्रकृति मनुष्य अपनी कुटिलता के कारण समाज में गड़बड़ उत्पन्न कर देते हैं, उससे समाज में फूट पड़ जाती है। इस भेद के कारण समाज की शक्ति क्षीण हो जाती है वैदिक लोग कहते है–

नकिर्देवा मिनीमसि नकिरा योपयामसि

न हम घात पात करते हैं और न ही फूट डालते हैं ठीक है निसिद्ध कर्मों से बचना उत्तम है, किन्तु मनुष्य का अहित तो विहि कर्मों में है अतः कहा है–मन्त्रश्रुत्यं चरामसि– मंत्र के श्रवणानुसार हम चलते हैं अर्थात जैसा वेद मंत्र में विहित है, मनुष्य मात्र को वैसा आचरण बनाना चाहिए। भगवान ने मानव के कल्याण के लिए वेदवाणी का विधान किया है।

वेद में मंत्रों को गुरु कहा गया है–मंत्रो गुरुः पुनरस्तु–(ऋग्वेद 1–147–4) मंत्र ही फिर गुरु होवे अर्थात् जहाँ कर्तव्य अकर्तव्य का बोध न हो, वहां मंत्र की शरण लेनी चाहिए मंत्र का एक अर्थ विचार भी होता है अर्थात् बिना विचारे कुछ नहीं करना चाहिए।

वेद की शिक्षा का एक छोटा सा नमूना इस मंत्र में दे दिया है– पक्षेभिरपिकक्षेभिरत्राभि सं रभामहे –तिनको के समान तुच्छ साथियों के साथ एक होकर हम वेग पूर्वक यहां कार्य करते हैं अर्थात किसी को भी घृणा या तुच्छता की दृष्टि से नही देखना चाहिए। तुच्छ से तुच्छ पदाथ भी अपना उपयोग रखता है। समझदार मनुष्य उससे भी अपनी कार्य सिद्धि कर लेता है।

संकेत से यह मंत्र ऊँच नीच भाव को समाज के लिए घातक मान उसे त्यागने की प्रेरणा कर रहा है।

वस्त्रेण किंम स्यादिति नैव वाच्यम्।
वस्त्रं सभायामुपकार हेतुः।।
अच्छे या बुरे वस्त्र से क्या फर्क पड़ता है ऐसा न बोलो क्योंकि सभा में तो वस्त्र बहुत उपयोगी होता है।

आर्यसमाज नोएडा के शीर्ष पदों पर रहकर सेवा करने वाले सदस्यों की सूची

वर्ष	प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष
1985-1989	श्री वेद प्रकाश विरमानी	श्री मनोहरलाल सरदाना	श्री मनोहरलाल सरदाना
1989-1991	श्री यशपाल बेरी	श्री राम बन्धु शास्त्री	श्री ज्ञानप्रकाश गुप्ता
1991-1993	डॉ. ओ.पी. बत्रा	श्री वीरेन्द्र सिंह हुड्डा	श्री अशोक आनन्द
1993-1997	डॉ. ए.बी. आर्य	श्री अशोक आनन्द	श्री शंकरलाल शर्मा
1997-2000	डॉ. मुमक्षु आर्य	कै. अशोक गुलाटी	श्री मनोवीर आर्य
2000-2001	श्री यशपाल बेरी	श्री डी. डी. शर्मा	श्री कृष्ण लाल मल्होत्रा
2001-2002	श्री मनोहर लाल सरदाना	श्री डी.डी. शर्मा	श्री के.एल. मल्होत्रा
2002-2003	श्री सत्यदेव आनन्द	कै. अशोक गुलाटी	श्री के.एल. मल्होत्रा
2003-2004	श्री सत्यदेव आनन्द	कै. अशोक गुलाटी	श्री के.एल. मल्होत्रा
2004-2005	श्री अशोक आनन्द	कै. अशोक गुलाटी	श्री वेदप्रकाश चोपड़ा
2005-2006	श्री अशोक आनन्द	कै. अशोक गुलाटी	श्री सतीश ग्रोवर
2006-2007	श्री अशोक आनन्द	कै. अशोक गुलाटी	श्री सतीश ग्रोवर
2007-2008	श्री एस.एन. आनन्द	कै. अशोक गुलाटी	श्रीमती गायत्री मीना
2008-2009	श्री एस.एन. आनन्द	श्री रविशंकर अग्रवाल	श्रीमती गायत्री मीना
2009-2010	श्री वीरेन्द्र हुड्डा	श्री रविशंकर अग्रवाल	श्रीमती वृन्दा सग्गी
2010-2011	श्री वीरेन्द्र हुड्डा	श्री रविशंकर अग्रवाल	श्रीमती वृन्दा सग्गी
2011-2012	कै. अशोक गुलाटी	श्री विजेन्द्र कठपालिया	श्री आनन्दप्रिय बक्शी
2012-2013	कै. अशोक गुलाटी	श्री विजेन्द्र कठपालिया	श्री सतीश ग्रोवर
2013-2014	श्रीमती गायत्री मीना	कै. अशोक गुलाटी	श्री नरेन्द्र सूद
2014-2015	श्रीमती गायत्री मीना	कै. अशोक गुलाटी	श्री नरेन्द्र सूद
2015-2016	श्री रविन्द्र सेठ	श्री विजेन्द्र कठपालिया	श्री नरेन्द्र सूद
2016-2017	श्री रविन्द्र सेठ	कै. अशोक गुलाटी	श्री नरेन्द्र सूद

–प्रधान सम्पादक

महर्षि दयानन्द सरस्वती सं पूर्व वेद का पूजन होता था, पाठ नहीं।
–श्री विश्वप्रकाश

आर्य समाज का प्रथम नियम

भावार्थ - ब्र. नन्द किशोर

1. **सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।**

व्याख्या

आर्य समाज के नियम में मुख्य रुप से तीन बातें कही गयी है–

प्रथम– सत्य विद्या से तात्पर्य वेद विद्या अर्थात ब्रह्म विद्या है।

द्वितीय– पदार्थ विद्या से सत्य विद्या।

तृतीय– आदि मूल परमेश्वर है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में लिखते हैं–

यो भूतं च भव्यं च सर्व यश्चाधितिष्ठति।
स्व र्यस्य च केवलं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः

भावार्थ

यो भूतं च – जो परमेश्वर एक भूतकाल जो व्यतीत हो गया है, च – अनेक चकारो से दूसरा जो वर्तमान है, भव्यं च – और तीसरा जो होने वाला है, इन तीनों कालो के बीच मे जो कुछ होता है उन सब व्यवहारों को वह यथावत् जानता है, सर्व यश्चाधितिष्ठति – तथा जो सब जगत को अपने विज्ञान से ही जानता है, रचता है, पालन करता है, लय करता है और संसार के सब पदार्थों का अधिष्ठाता अर्थात स्वामी है, स्व र्यस्य च केवलं – जिसका सुख ही केवल स्वरुप है, जो कि मोक्ष और व्यवहार सुख का भी देने वाला है, तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः ज्येष्ठ अर्थात सबसे बड़ा सब सामर्थ्य से युक्त ब्रह्म जो परमात्मा है, उसको अत्यंत प्रेम से हमारा नमस्कार हो। जो कि सब कालों के ऊपर विराजमान है, जिसको लेशमात्र भी दुःख नहीं होता उस आनन्दघन परमेश्वर को हमारा नमस्कार प्राप्त हो।।

यस्य भूमिः प्रमान्तरिक्षमुतोदरम्।
दिवं यश्चक्रे मूर्धनं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः।।

भावार्थ

यस्य भूमिः प्रमान्त– जिस परमेश्वर के होने और में भूमि जो पृथिवी आदि पदार्थ हैं सो प्रमा अर्थात् यथार्थज्ञान की सिद्धि होने का दृष्टान्त है, तथा जिसने अपनी सृष्टि में पृथिवी को पादस्थानी रचा है, अन्तरिक्षमुतोदरम् – अन्तरिक्ष जो पृथिवी और सूर्य के बीच में आकाश है सो जिसने उदर स्थानि किया है, दिवं यश्चक्रे मूर्धन– और जिसने अपनी सृष्टि में दिव् अर्थात् प्रकाश करने वाले पदार्थों को सब के ऊपर मस्त कस्थानी किया है, अर्थात् जो पृथिवी से लेकर सूर्य लोक पर्यन्त सब जगत को रच के उसमें व्यापक होके, जगत के सब अवयवों में पूर्ण होके सब को धारण कर रहा है, तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः उस परब्रह्म को हमारा अत्यन्त नमस्कार हो।।

यस्य सूर्यश्चक्षुश्चन्दमाश्च पुनर्णवः।
अग्निं यश्चक्र आस्यं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः।।

भावार्थ

यस्य सूर्यश्चक्षुश्चन्दमाश्च और जिसने नेत्र स्थानी सूर्य और चन्द्रमा को किया है, जो कल्प–कल्प के आदि में सूर्य और चन्द्रमादि और जिसने मुख स्थानी अग्नि को उत्पन्न किया है, तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः उसी ब्रह्म को हम लोगों का नमस्कार हो।।

यस्य वातः प्राणापानौ चक्षुरंगिरसौभवन्।
दिशो यश्चक्रे प्रज्ञानीस्तमै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः।।

भावार्थ

यस्य वातः प्राणापानौ– जिसने ब्रह्माण्ड के वायु को प्राण और अपान की नाई किया है, चक्षुरंगिरसौभवन् – तथा

जो प्रकाश करने वाली किरण है वे चक्षु की नाई जिसने की है, अर्थात् उनसे ही रुप ग्रहण होता है, 'दिशो यश्चक्रे प्रज्ञा.' – और जिसने दस दिशाओं को सब व्यवहारों को सिद्ध करने वाली बनााई है, ऐसा जो अनन्तविद्यायुक्त परमात्मा सब मनुष्यों का इष्टदेव है, उस ब्रह्म को निरंतर हमारा नमस्कार हो।।

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऽऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दासि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत।।

भावार्थ

प्रथम ईश्वर को नमस्कार और प्रार्थना करके पश्चात् वेदों की उत्पत्ति का विषय लिखा जाता है, कि वेद किसने उत्पन्न किये हैं।

तस्माद्यज्ञात्स.– सत् जिसका कभी नाश नहीं होता, चित् जो सदा ज्ञान स्वरुप है, जिसको अज्ञान का लेश भी कभी नही होता, आनंद जो सदा सुख स्वरूप और सबको सुख देने वाला, इत्यादि लक्षणों से युक्त पुरुष जो सब जगह में यदि पूर्ण हो रहा है, जो सब मनुष्यों के उपासना के योग्य इष्ट देव और सब सामर्थ्य से युक्त है, उसी परब्रह्म से ऋचा – ऋग्वेद, यजु– यजुर्वेद, सामानि–सामवेद और छन्दांसि इस शब्द से अथर्व भी, ये चारो वेद उत्पन्न हुए हैं। इसलिए सब मनुष्यों को उचित है कि वेदों को ग्रहण करें और वदोक्त रीति से चलें। 'जज्ञिरे' और अजायत इन दोनों क्रियाओं के अधिक होने से वेद अनेक विद्याओं से युक्त हैं ऐसा जाना जाता है। वैसे ही 'तस्मात' इन पदो के अधिक होने से यह निश्चय जानना चाहिए कि ईश्वर से ही वेद उत्पन्न हुए हैं। किसी मनुष्य से नहीं वेदों में सब मंत्र गायत्र्यादि छन्दों से युक्त ही हैं फिर 'छन्दासि' इस पद के कहने से चौथा जो अथर्ववेद है उसकी उत्पत्ति का प्रकाश होता है कि यज्ञ शब्द से विष्णु का और विष्णु शब्द से सर्वव्यापक जो परमेश्वर है उसी का ग्रहण होता है क्योंकि सब जगत् की उत्पत्ति करनी परमेश्वर में ही घटती है अन्यत्र नहीं।।

यस्मादृचो अपातक्षन्यजुर्यस्मादपाकषन्। सामानि यस्य
लोमान्यथर्वाङ्गिरसो मुखं स्कम्भं तं ब्रूहि कतमः स्विदेव सः।।
अथर्व. 10.07.20।।

भावार्थ

यस्मादृचो अपा.– जो सर्वशक्तिमान् परमेश्वर है, उसी से ऋचः= ऋग्वेद यजुः= यजुर्वेद, सामानि=सामवेद, आंगिरसः= अथर्ववेद, ये चारों उत्पन्न हुए हैं। इसी प्रकार रूपकालंकार से वेदों की उत्पत्ति का प्रकाश ईश्वर करता है कि अथर्ववेद मेरे मुख के समतुल्य, सामवेद लोमों के समान, यजुर्वेद हृदय के समान और ऋग्वेद प्राण के नाईं हैं। ब्रूहि कतमः स्विदेव सः= कि चारों वेद जिससे उत्पन्न हुए हैं वो कौन सा देव है, उसको तुम मुझसे कहो? इस प्रश्न का उत्तर कि– स्कम्भं तं0– जो जगत् का धारणकर्त्ता परमेश्वर है उसका नाम स्कम्भ है, उसी को तुम वेदों का कर्त्ता जानो और यह भी जानो कि उसको छोड़ के मनुष्यों को उपासना करने के योग्य दूसरा कोई इष्टदेव नहीं है क्योंकि ऐसा अभागा कौन मनुष्य है जो वेदों के कर्त्ता सर्वशक्तिमान् परमेश्वर को छोड़ के दूसरे को परमेश्वर मान के उपासना करे।।

पूर्णात्पूर्णमुदचति पूर्णं पूर्णेन सिच्यते।
उतो तदद्य विद्याम यतस्तत्परिषिच्यते।।
अथर्व. 10.8.29।

भावार्थ

पूर्ण से पूर्ण उत्पन्न होता है और यह पूर्ण उस पूर्ण द्वारा सींचा भी जाता है। तो अब आज हम उस पूर्ण को जानें, प्राप्त करें, यतः=जिस द्वारा वह (दूसरा पूर्ण) पूर्णतया सींचा जा रहा है।

यो विद्यात्सूत्रं विततं यस्मिन्नोताः प्रजा इमाः।
सूत्रं सूत्रस्य यो विद्यात्स विद्याद् ब्राह्मणं महत्।।
अथर्व. 10.08.37।।

भावार्थ

जिसमें ये प्रज्ञाएँ ओत–प्रोत हैं, जो उस फैले हुए सूत्र को जान लें। और सूत्र के सूत्र को जान ले। वह ज्ञानी श्रेष्ठ ब्रह्मज्ञान को जान सकता है।

विमर्ष

जिस सूत्रात्मा में सब प्रजा अर्थात् सृष्टि ओत–प्रोत है, उस सूत्रात्मा को जानना चाहिए और सर्वाधार परब्रह्म परमात्मा को भी जानना चाहिए। यही अन्तिम ज्ञातव्य है।

बृहस्पते प्रथमं वाचो अग्रं यत्प्रैरत नामधेयं दधानाः।
यदेषां श्रेष्ठं यदरिप्रमासीत्प्रेणा तदेषां निहितं गुहाविः।।

भावार्थ

हे वाणी के स्वामी! वाणी के श्रेष्ठ रूप सृष्टि के प्रारम्भ में प्रादुभाव हुआ। पदार्थों के नाम और ज्ञान को धारण करते हुए परमर्षि उस वेदवाणी से प्रेरित हुए। इन वाणियों की श्रेष्ठ प्रेरणा पाप रहित धर्म रूप में स्थिर होकर ऋषियों के हृदय में प्रकट होती है।

पदार्थ विद्या

वेदों में तीन अनादि पदार्थ विद्या हैं– ईश्वर, जीव, प्रकृति।

इसको आप त्रैतवाद भी कह सकते हैं।

उदाहरणार्थ–

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्न्यो अभि चायकीशीति।।
ऋ. 1.164.20।।

अर्थ

जीवात्मा और परमात्मा ये दोनों के प्रकृति रूपी एक वृक्ष पर स्थित हैं। जीवात्मा कर्म के द्वारा फल को चखता है, परन्तु परमात्मा कुछ भोगता हुआ द्रष्टा है।

शिक्षा ही नहीं, सस्ंकार भी

–पी.पी. गोयल
वानप्रस्थाश्रम, नोएडा

हम अपने टूटते परिवारों के लिए दुःखी तो हैं, अपने संग सम्बन्धियों में बैठे चर्चा भी करते हैं, पर है सभी घरो की एक ही कहानी । कौन किसको निदान बताए उसकी बर्बादी से बचाव का! हम सभी का मानना है कि हमारे बच्चे असभ्य, असंयमी होते जा रहे हैं, उन पर किसी का अंकुश काम नही करता। जिन बच्चों को उच्च शिक्षा का अवसर मिला, उच्च पदों पर कार्यरत भी है,पर फिर भी छोटे से लेकर बड़े तक सभी घरो के बच्चे परिवारिक जिम्मेदारियाँ निभाने में सफल क्यों नही ! एक जुट रहने में असफल क्यों आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होते हुए भी कलह से ग्रसित क्यों घर में छोटे–बडों को समान आदर प्राप्त क्यों नहीं! जीवन को बोझिल बना लिया है, हमें हँसते खेलते जीवन कहीं दिखता नहीं।

हम माता–पिता ही अपनी संतानो के शत्रु और बैरी साबित हुए हैं क्योंकि हमने उन्हें संस्कारों में ढालने का कोई प्रयास नहीं किया, जिनमें ढलकर वे निर्धारित रुप लेते हैं फिर उनकी चमक हंसो जैसी होती है जिनके बीच बैठकर बगुले को सफेद रंग का होने पर भी सम्मान प्राप्त नहीं होता। हंसो की तो अपनी पृथक पहचान जो होती है ।

हाय! हमने क्या कर डाला, पश्चिमी सभ्यता की ललक में हमें अपनी सन्तानों को संस्कारों से दूर कर दिया। आज बहुत से उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्ति भी प्रायः असभ्य दिखते हैं। वे मानवीय काया में ढले हुये अवश्य हैं, पर उन पर संस्कारों की पालिश करने में शायद हमसे अवश्य कहीं भूल हो गई है। चिन्तन करना आवश्यक है।

ईश्वर उपासना की विधि

–श्री विजेन्द्र कठपालिया
उप प्रधान, आर्य समाज, नोएडा

प्राचीन काल में हमारे देश का नाम आर्यावर्त्त था अर्थात् आर्यों का देश। आर्य का अर्थ है–श्रेष्ठ पुरूष। रामायण काल में माता सीता अपने पति श्री रामचन्द्र जी को आर्य पुत्र! कहकर सम्बोधन करती थीं। इसी प्रकार महाभारत काल में भी श्रीकृष्ण को भी आर्य प्रदेश का राजा कहा जाता था।

आर्यों का ईश्वरोपासना का ढंग आरम्भ से ही हवन, सन्ध्या रहा है और वेद ही हमारे प्राचीनतम ग्रन्थ हैं। श्रीराम और श्रीकृष्ण भी अपनी दिनचर्या हवन व सन्ध्या से ही आरम्भ करते थे। इसका प्रमाण रामचरितमानस की चौपाइयों में भी मिलता है, जिनमें वर्णन आता है "हवन यज्ञ करन चले चारों भाई"।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने जो वचन गुरू दक्षिणा में अपने गुरू स्वामी विरजानन्द जी को दिया था उसका पालन जीवन पर्यन्त किया और प्रयत्न किया कि यही प्रथा सदा चलती रहे। उसके लिए उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की और मानव कल्याण के लिए 10 नियमों की स्थापना की ताकि मानव जाति उन नियमों पर चल कर अपने जीवन को सफल बना सके। उन्होंने एक ऐसे समाज की कल्पना की जिसमें केवल अपने देश का ही नही अपितु पूरे विश्व का कल्याण हो। इसलिए हमारी प्रार्थना प्रतिदिन यही होती है–

सर्वे भवन्तु सुखिना सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग भवेत्।।

विश्व में केवल भारत में ही ऐसी प्रार्थना की जाती है। महर्षि दयानंद ने जो ईश्वर स्तुति प्रार्थना मत्रों का संकलन किया है अगर हम उनमें से एक मंत्र को भी अपने जीवन में उतार लें तो हमारा जीवन कुन्दन बन जाये। हम ईश्वर प्रार्थना उपासना के प्रथम मंत्र पर विचार करते है–

ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव, यद् भद्रं तन्न आसुव।।

अर्थात् हम परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि हमारे अंदर जितने भी बुरे गुण, कर्म, और स्वभाव हैं वह सब हमसे दूर कर दें तो कल्पना करे कि अगर हमारे दुरित, अवांछनीय बातें हमसे दूर हो जायें तो हम एक अच्छे इंसान स्वतः ही बन जायेंगे और कोई भी व्यक्ति हमसे द्वेष, घृणा नहीं करेगा।

मंत्र के दूसरे भाग में हमने ईश्वर से प्रार्थना की है कि जो भी भद्र गुण, कर्म व स्वभाव हैं वह हमें प्रदान कीजिए तो विचार करें पहले भाग के द्वारा हमनें अपनें जीवन रुपी बर्तन को स्वच्छ व निर्मल कर लिया है व दूसरे भाग द्वारा हमनें अपनें जीवन को कुंदन बनाने का प्रयत्न किया है अगर यह स्थिति हम प्राप्त कर लेते हैं तो हमारा स्वप्न 'सर्वे आशा मम् मित्रं भवन्तु' अपने आप ही साकार हो जायेगा।।

इसी प्रकार हर एक वेद मंत्र में खजाना भरा है और हम ईश्वर से जीवन के असंख्य गुणों व सुखों को प्राप्त कर सकते हैं अगर हम वेद मंत्रों का अर्थ सहित अध्ययन कर अपने जीवन में उन्हें उतारें।

कोई काम बुरा है या भला, इसका भाव सबसे पहले आत्मा में ही उत्पन्न होता है।

–पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय

परमात्मा के गुण, कर्म और स्वभाव

अधर्मात्मा, अविद्वान, विचारशून्य, अजितेन्द्रिय तथा ईश्वरभक्ति रहित दोषों से युक्त मनुष्यों से ईश्वर दूर है।

–स्वामी दयानन्द

परमेश्वर के बिना मुक्ति पाने का कोई दूसरा मार्ग नहीं है।

–स्वामी दयानन्द

जो परमात्मा का उपस्थान करते हैं वे यशस्वी और कीर्तिमान होते हैं। जो योगाभ्यास करते हैं वे भेड़िया, व्याघ्र, और सिंह के समान एकांत देश का सेवन करके पराक्रम वाले होते हैं।

–स्वामी दयानन्द

परमेश्वर अत्यन्त दयालु है, अतः जो जीव उसकी प्राप्ति के लिए तन, मन, धन से श्रद्धापूर्वक पुरूषार्थ करता है, उसे परमात्मा शीघ्र प्राप्त होता है।

–स्वामी दयानन्द

यह प्रभु की महती कृपा है कि एक चोले के जीर्ण होने पर दूसरा मिल जाता है।

–गंगाप्रसाद उपाध्याय

यदि चमत्कार सम्भव है तो फिर परमात्मा के नाम की कोई सत्ता नहीं हो सकती।

उस परम सत्य को पाने के लिए, परम श्रद्धा और अटूट विश्वास की महती आवश्यकता है।

आंक रहे हैं, इधर–उधर सब,
अपने अन्दर आंके कौन।
ढूंढ रहे दुनिया में कमियां,
अपने मन में ताके कौन।
सबके अन्दर दर्द छुपा है,
उसको अब ललकारे कौन।
दुनिया सुधरे सब चिल्लाते,
खुद को आज सुधारे कौन।
पर उपदेश कुशल बहुतेरे,
खुद पर आज विचारे कौन।
हम सुधरें तो जग सुधरेगा,
यह सीधी बात उतारे कौन।।

– पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

Happiness is a choice, not a result.

Nothing will make you happy until

You choose to be happy.

No person will make you happy
unless you decide to be happy.

Your happiness will not come to you.

It can only come from you.

महर्षि दयानन्द के प्रति

–मोहन प्रसाद उपाध्याय
उपाचार्य, आर्य समाज, नोएडा

यह ऋषि दयानन्द का काम था कि उसने वेदभानु की रश्मियों से आपको आलोकित कर दिया। ऋषि ने आपको वेंदो का सीधा मार्ग दिखाया है और आपको उस ओर जाना पड़ेगा जिस ओर वह ले जाता है। कोई भी शक्ति ऋषि दयानन्द के विरोध में सफल नही हो सकती ।

स्वामी जी ने मूर्ति–पूजा का विरोध किया और लोग व्यख्यान सुनकर बाहर निकले तो उनको ब्राह्म समाज के प्रधान ने कहा, "मेरा जीवन नष्ट हो गया क्योंकि मैंने एक बार भी मूर्ति–पूजा का खण्डन नही किया।" इस प्रकार इस व्याख्यान ने उनके ह्रदय में भी एक उत्साह भर दिया ।

स्वमी जी ने लोगो में यह भाव उत्पन्न कर दिया कि प्राचीन आर्य असभ्य नही थे, सभ्य थे। प्रसिद्ध वैज्ञानिक प्रफुल्लचन्द्र राय पिछलों दिनो लाहौर पधारे थे। आपने प्रायः उनके भाषण सुने होगें। उन्होनें बतलाया कि रसायनशास्त्र का ज्ञान हिन्दुओ को उस समय था जब शेष संसार उससे अपरिचित था।

ऋषि ने विभिन्न देवी–देवताओं की पूजा छुड़वा कर एक ईश्वर की ओर लोगो को लगाया और एक सन्ध्या और गायत्री का जाप सिखलाया। स्वामी जी ने यहां प्रकृति को लिया, यहाँ जीवात्मा और परमात्मा को भी लिया। उन्होंने जिस स्थान पर प्रारब्ध को रखा उसके सामने पुरूषार्थ को भी रखा। स्वामी जी ने जो सच्चाईयां प्रकट की हैं, यही आर्य जाति को संगठित करने वाली है।

स्वामी जी का इस सृष्टि पर सबसे बड़ा उपकार यह है कि उन्होंने वेदों के वास्तविक अर्थ प्रकट किये और वे भी कोई नवीन नहीं। उन्होंने डंके की चाट से यह घोषणा की कि ब्रह्मा से जैमिनी पर्यन्त ऋषियों के जो सिद्धान्त रहे हैं, वही उनके सिद्धान्त हैं। वे सत्य सनातन वैदिक धर्म को पुनर्जीवित करना चाहते हैं ।

स्वामी दयानन्द के सिंहनाद ने हिन्दुओं की आँखें खोल दीं कि वे इस भूलभुलैयों के जीवन से निकले और वैदिक चलन को ग्रहण करें। जो एक सिद्धान्तवादी जीवन का मार्गदर्शन करता है।

रक्त साक्षी पं. लेखराम बलिदान (06 मार्च 2017) को आर्य समाज नोएडा, सेक्टर–33 में मनाया गया। जिसमें समस्त पदाधिकारी, आचार्यगण तथा ब्रह्मचारियों ने भाग लिया। इस अवसर पर उनके द्वारा देशहित में किये गये कार्यों पर विशेष चर्चा हुई। पं. लेखराम जी को शत्–शत् नमन्!

वाण्येका समलं करोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते।

संस्कृत अर्थात् संस्कार युक्त वाणि ही मानव को सुशोभित करती है।

भारतीय नारी की चेतना

- श्रीमती मनोरमा घई
वसुन्धरा एन्क्लेव, दिल्ली–96

ममतामयी श्रद्धामयी नारी! तुम गुणों की खान हो।
वीर जननी वीरांगना तुम वसुन्धरा की शान हो।।

वीर जननी के तुमने, देश को शिवाजी वीर दिया।
वीरांगना लक्ष्मीबाई तुमने, अंग्रेजों को भी चौंका दिया।।

बनके पन्नाधाय तुम, ममता का देती बलिदान हो।
त्याग और कर्त्तव्य की मूरत, तुम महान हो।।

देवकी और यशोदा बनकर, कृष्ण योगीराज दिया।।
दुर्गा रूपचण्डी बनकर, करती संहार हो।

वीरजननी वीरांगना तुम, भारत का अभिमान हो।
बन कौशल्या मां तुमने, मर्यादा पुरूषोत्तम राम दिया।।

वीरजननी वीरांगना तुम, निज देश का अभिमान हो।।
इन्दिरा और प्रतिभा बनकर, निज देश पर शासन किया।

गार्गी और मैत्रेयी बनकर, शास्त्रार्थ भी तुमने किया।।
वीर प्रसवा, वीरांगना तुम विदुषी और बुद्धिमान हो।

ममतामयी, श्रद्धामयी नारी तुम अति महान हो।।
सानिया मिर्जा बनकर खेल जगत में छा गई।

कल्पना चावला तुम, अन्तरिक्ष में छा गई।।
पत्नी विद्योत्तमा तुमने, कालिदास महाकवि बना दिया।

मीरा, सुभद्रा, महादेवी तुमने, काव्य जगत चमका दिया।।
क्या–क्या बताऊँ क्या–क्या सुनाऊँ, क्या–क्या तुमने नहीं किया।

नहीं जानती वह कार्य, जिससे तुम अनजान हो।
ममतामयी, श्रद्धामयी नारी तुम अनुपम गुणों की खान हो।।

अब क्यों असहाय बनकर, दुराचार तुम सहती हो।
क्यों नहीं रूपचण्डी बनकर, अत्याचारी से टकराती हो।।

उठो जागो, संभालो और दिखला दो इस संसार को।
कि तुम निर्बल नहीं अबला नहीं, तुम भी पौरूषवान हो।

वीरजननी वीरांगना तुम, मातृभूमि की शान हो।
ममतामयी, श्रद्धामयी तुम, दिव्य गुणों की खान हो।

तुम पूज्य और महान हो, तुम अतुलित गुणों की खान हो।
तुम्हें शत्–शत् प्रणाम हो।।

व्यवहार कैसा हो

–श्री ओमप्रकाश अग्रवाल

दुनियाँ में एक कहावत प्रसिद्ध है– कि जो व्यवहार आप दूसरों से चाहते हो वो खुद भी करो, जो व्यवहार तुमको अच्छा नहीं लगता वो दूसरों के साथ भी न करो। यही वाक्य सारी दुनियाँ में मशहूर है इस वाक्य को हर भाषा में लिखा गया है बात भी सही है। हर आदमी चाहता है मेरे साथ अच्छा व्यवहार हो चोर भी चाहता मेरा नौकर ईमानदार हो। उसका व्यवहार ठीक हो। एक चोर दूसरे चोर से यही आशा रखता है। मुझसे सच्चा व्यवहार करना। अगर व्यवहार सही है तो दुनियाँ अपनी होती है। कई लोग शुरू–शुरु में व्यवहार सही करते हैं। उसके बाद उनका व्यवहार बदल जाता है।

स्वामी दयानंद जी ने व्यवहार भानु नामक पुस्तक लिखी है जो आर्य समाज में मिलती है। उसमें कुछ बातों को लिखा गया है। व्यवहार कैसा हो? बाजार में कैसा हो? दुकान पर, दफ्तर पर कैसा हो? इसकी झलक उसमें मिलती है। व्यवहार में सच्चाई होनी चाहिए। मीठापन होना चाहिए। ठगी, चोरी वाला व्यवहार कुछ दिन ही चलता है। एक बार किसी के साथ ठगी कर लो कम से कम दस लोगों को पता चल जाता है। अगर दस लोगों से ठगी करो तो सौ लोगों को पता चल जाता है। अगर सौ लोगों से ठगी करो तो सब को पता लग जाता है। वह ठग कहलाता है। मरने के बाद भी लोग उसे ठग कहते हैं।

एक बार बाबा फरीद शहर की ओर आ रहा था सर्दी के दिन थे वर्षा भी हो रही थी रात का समय हो चुका था बाबा फरीद को सर्दी लग रही थी देखता है एक चौबारा उसमें रोशनी है बाबा फरीद ऊपर गये बोले– मां! दरवाजा खोलो अंदर से आवाज आई – देखो, मां कहनें वाला आज कौन आया है? नौकरानी आयी, दरवाजा खोला तो देखा कोई फकीर लगता है। महारानी बोली अंदर ले जाओ बाबा फरीद अंदर आ गया। आग जलायी गयी, कंबल दिया गया रात बीतने वाली थी, बाबा फरीद ने देखा यह तो मैं गलत जगह पर आ गया यह तो वैश्या का कोठा है दिन निकल रहा है। मन ही मन फरीद अपने को कोस रहा था। इतने से नीचे से एक अर्थी निकली जिसके पीछे लोग जा रहे थे। वैश्या ने अपनी नौकरानी से कहा देखकर आओ यह स्वर्ग गया या नर्क़ गया बाबा फरीद सब बातें सुन रहा था। सोच रहा था कि यह सब क्या हो रहा है नौकरानी जो गयी थी वह वापस आ गयी और बोली यह तो स्वर्ग को गया है। यह बात सुन कर फरीद को अचम्भा हुआ। नौकरानी को पता है स्वर्ग क्या होता है नर्क क्या होता है।

उसने वेश्या को पूछा बेटी यह बताओ तुमको पता कैसे लग गया कि यह स्वर्ग को गया है ? वेश्या बोली "जब इंसान मर जाता है तो उसका व्यवहार पीछे रह जाता है। जो दुनियां होती है उसके व्यवहार के प्रति अपनी प्रतिक्रिया कहती है उसी से पता चल जाता है। अच्छा हो तो स्वर्ग, गन्दा हो तो नर्क।" सीधा तरीका है व्यवहार ठीक रखो।

तन साधा तो तान मिले
मन साधा तो मान मिले
बुद्धि साधी तो ज्ञान मिले
चरित्र साधा जिसने त्याग से
धरा से गगन तक सम्मान मिले।

श्रद्धा ज्ञानं ददाति
नम्रता मानं ददाति
योग्यता स्थानं ददाति

श्रद्धा ज्ञान देती है, नम्रता मान देती है और योग्यता स्थान देती है।

स्वराज्य के प्रथम सन्देशवाहक - महर्षि दयानन्द सरस्वती

–ओमकार शास्त्री
संस्कृत प्रवक्ता, आर्ष गुरुकुल, नोएडा

महर्षि दयानन्द सरस्वती को सामान्यतः केवल आर्य समाज के संस्थापक तथा समाज–सुधारक के रूप में ही नहीं जाना जाता है, बल्कि राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के लिए किये गए प्रयत्नों में उनकी उल्लेखनीय भूमिका से भी जाना जाता है, लेकिन इसकी वस्तुस्थिति यह है कि पराधीन भारत में यह कहने का साहस सम्भवतः सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ही किया था कि "भारत, भारतीयों का है"। हमारे प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम सन् १८५७ की क्रान्ति की सम्पूर्ण योजना भी महर्षि दयानन्द जी के नेतृत्व में ही तैयार की गई थी और वही उसके प्रमुख सूत्रधार भी थे। वे अपने प्रवचनों में श्रोताओं को प्रायः राष्ट्रवाद का उपदेश देते और देश के लिए मर मिटने की भावना भरते थे। १८५५ में हरिद्वार में जब कुम्भ मेला लगा था तो उसमें शामिल होने के लिए स्वामी जी ने आबू पर्वत से हरिद्वार तक पैदल यात्रा की थी। रास्ते में उन्होंने स्थान–स्थान पर प्रवचन किए तथा देशवासियों की नब्ज टटोली। उन्होंने यह अनुभव किया कि लोग अब अग्रेजों के अत्याचारी शासन से तंग आ चुके हैं और देश की स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष करने को आतुर हो उठे हैं।

क्रान्ति के विमर्श

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने हरिद्वार पहुँच कर वहां एक पहाड़ी के एकान्त स्थान पर अपना डेरा जमाया। वहीं पर उन्होंने पाँच ऐसे व्यक्तियों से मुलाकात की, जो आगे चलकर सन् १८५७ की क्रान्ति के कर्णधार बने। ये पांच व्यक्ति थे– नाना साहेब, अजीमुल्ला खां, बाला साहब, तात्या टोपे तथा बाबू कुंवर सिंह। बातचीत काफी लम्बी चली और यहीं पर यह तय किया गया कि फिरंगी सरकार के विरुद्ध सम्पूर्ण देश में सशस्त्र क्रान्ति के लिए आधारभूमि तैयार की जाए और उसके बाद एक निश्चित दिन सम्पूर्ण देश में एक साथ क्रान्ति का बिगुल बजा दिया जाय। जनसाधारण तथा भारतीय सैनिकों में इस क्रान्ति की आवाज को पहुंचाने के लिए रोटी तथा मकान की भी योजना यहीं तैयार की गई। इस सम्पूर्ण विचार विमर्श में प्रमुख भूमिका स्वामी दयानन्द सरस्वती की ही थी।

विचार विमर्श तथा योजना–निर्धारण के उपरान्त स्वामी जी तो हरिद्वार में ही रुक गए तथा अन्य पांचों राष्ट्रीय नेता योजना को यथार्थ रूप देने के लिए अपने–अपने स्थानों पर चले गए। उनके जाने के बाद स्वामी जी ने अपने कुछ विश्वस्त साधु सन्यासियों से सम्पर्क स्थापित किया और उनका एक गुप्त संगठन बनाया। इस संगठन का मुख्यालय इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) में महरौली स्थित योगमाया मन्दिर में बनाया था। इस मुख्यालय ने स्वाधीनता समर में उल्लेखनीय भूमिका निभायी। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के नेतृत्व में साधुओं ने भी सम्पूर्ण देश में क्रान्ति का अलख जगाया। वे क्रान्तिकारियों के सन्देश एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचाते, उन्हें प्रोत्साहित करते और आवश्यकता पड़ने पर स्वयं भी हथियार उठाकर अंग्रेजों से संघर्ष करते। सन् १८५७ की क्रान्ति की सम्पूर्ण अवधि में राष्ट्रीय नेता, महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के निरन्तर सम्पर्क में रहे।

स्वतन्त्रता संघर्ष की असफलता पर भी महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी निराश नहीं थे, उन्हें तो इस बात का पहले से ही आभास था कि केवल एक बार प्रयत्न करने से ही स्वतन्त्रता प्राप्त नहीं हो सकती। इसके लिए तो संघर्ष की लम्बी प्रक्रिया चलानी होगी। हरिद्वार में ही १८५५ की बैठक में बाबू कुंवर सिंह ने जब अपने इस संघर्ष में सफलता की संभावना के बारे में स्वामी जी से पूछा तो उनका बेबाक उत्तर था "स्वतन्त्रता संघर्ष कभी असफल नहीं होता"। भारत धीरे–धीरे लगभग सौ वर्ष में परतन्त्र बना है। अब इसको स्वतन्त्र होने में लगभग सौ वर्ष लग

जायेंगे। इस स्वतन्त्रता प्राप्ति में बहुत से अनमोल प्राणों की आहुतियां डाली जायेंगी। महर्षि दयानन्द सरस्वती की यह भविष्यवाणी कितनी सही निकली, इसे बाद की घटनाओं ने प्रमाणित कर दिया। स्वतन्त्रता– संघर्ष की असफलता के बाद जब तात्या टोपे, नाना साहब तथा अन्य राष्ट्रीय नेता स्वामी जी से मिले तो उन्हें भी उन्होंने निराश न होने तथा उचित समय की प्रतीक्षा करने की ही सलाह दी।

१८५७ की क्रान्ति के दो वर्ष बाद महर्षि दयानन्द सरस्वती ने स्वामी विरजानन्द को अपना गुरु बनाया और उनसे दीक्षा ली। स्वामी विरजानन्द की कुटिया में रहकर उन्होंने वेदों का अध्ययन किया, उन पर चिन्तन किया और उसके बाद अपने गुरु के निर्देशानुसार वे वैदिक ज्ञान के प्रचार–प्रसार में जुट गये। इसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उन्होंने आर्य समाज की भी स्थापना की और उसके माध्यम से उन्होंने समाज–सुधार के अनेक कार्य किए। छुआछूत, सती प्रथा, बाल विवाह, नर–बलि, धार्मिक संकीर्णता तथा अन्धविश्वासों के विरुद्ध उन्होंने जमकर प्रचार किया और विधवा विवाह, धार्मिक उदारता तथा आपसी भाईचारे का उन्होंने समर्थन किया तथा सभी कार्यों को करने पर भी स्वामी दयानन्द जी लोगों में देशभक्ति की भावना भरने से भी कभी नहीं चूकते थे।

प्रारम्भ में अनेक व्यक्तियों ने स्वामी जी के समाज सुधार के कार्यों में विभिन्न प्रकार के विघ्न डाले और उनका विरोध किया। धीरे–धीरे उनके तर्क लोगों की समझ में आने लगे और विरोध कम हुआ। उनकी लोकप्रियता निरन्तर बढ़ने लगी। इससे अंग्रेज अधिकारियों के मन में यह इच्छा उठी कि अगर इन्हें अंग्रेज सरकार के पक्ष में कर लिया जाए तो सहज ही उनके माध्यम से जनसाधारण में अंग्रेजों को लोकप्रिय बनाया जा सकता है। इससे पूर्व अंग्रेज अधिकारी इसी प्रकार से अन्य कुछ धर्मोपदेशकों तथा धर्माधिकारियों को विभिन्न प्रकार के प्रलोभन देकर अपनी तरफ मिला चुके थे। उन्होंने स्वामी दयानन्द सरस्वती को भी उन्हीं के समान समझा। तदनुसार एक ईसाई पादरी के माध्यम से स्वामी जी की तत्कालीन गवर्नर जनरल लॉर्ड नार्थब्रुक से मुलाकात मार्च १८७३ में कलकत्ता में हुई।

अंग्रेजों को तीखा जबाब

इधर–उधर की कुछ औपचारिक बातों के उपरान्त लॉर्ड नार्थब्रुक ने विनम्रता से अपनी बात स्वामी जी के सामने रखी– "अपने व्याख्यान के प्रारम्भ में आप जो ईश्वर की प्रार्थना करते हैं, क्या उसमें आप अंग्रेजी सरकार के कल्याण की भी प्रार्थना कर सकेंगे।"

गर्वनर जनरल की बात सुनकर स्वामी जी सहज ही सब कुछ समझ गए। उन्हें अग्रेजी सरकार की बुद्धि पर तरस भी आया, जो उन्हें ठीक तरह नहीं समझ सकी। उन्होंने निर्भीकता और दृढ़ता से गवर्नर जनरल को उत्तर दिया–

"मैं ऐसी किसी भी बात को स्वीकार नहीं कर सकता, मेरी यह स्पष्ट मान्यता है कि राजनीतिक स्तर पर मेरे देशवासियों की निर्बाध प्रगति के लिए तथा संसार की सभ्य जातियों के समुदाय में भारत को सम्माननीय स्थान प्रदान करने के लिए यह अनिवार्य है कि मेरे देशवासियों को पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त हो। सर्वशक्तिशाली परमात्मा के समक्ष प्रतिदिन मैं यही प्रार्थना करता हूं कि मेरे देशवासी विदेशी सत्ता के जुए से शीघ्रातिशीघ्र मुक्त हों।"

गवर्नर जनरल को स्वामी जी से इस प्रकार के तीखे उत्तर की आशा नहीं थी। मुलाकात तत्काल समाप्त कर दी गई और स्वामी दयानन्द जी वहां से लौट आये। इसके उपरान्त सरकार के गुप्तचर विभाग की स्वामी जी पर तथा उनकी संस्था आर्य–समाज पर गहरी दृष्टि रही। उनकी प्रत्येक गतिविधि और उनके द्वारा बोले गए प्रत्येक शब्द का रिकार्ड रखा जाने लगा। आम जनता पर उनके प्रभाव से सरकार को अहसास होने लगा कि यह बागी फकीर और आर्यसमाज किसी भी दिन सरकार के लिए खतरा बन सकते हैं। इसलिए स्वामी जी को समाप्त करने के लिए भी तरह–तरह के षड्यन्त्र रचे जाने लगे। लेकिन महर्षि दयानन्द सरस्वती दिन–रात देश की स्वतन्त्रता के लिये संघर्ष में लगे हुये थे, उसी समय स्वामी जी का जोधपुर जाना हुआ, वहां स्वामी जी को विष दे दिया गया और स्वामी जी के रहते देश को स्वतन्त्रता प्राप्त नहीं हो सकी, लेकिन महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्वराज्य की प्राप्ति के लिये जो नींव डाली गई उसी से प्रेरित होकर अनेक शहीदों–भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरू, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, रामप्रसाद बिस्मिल आदि ने अपना बलिदान दिया तभी देश को आजादी मिल सकी। इसीलिये महर्षि दयानन्द सरस्वती को आजादी का प्रथम उद्घोषक माना जाता है।

समाचार दर्पण

राष्ट्रीय आर्य बुद्धिजीवी एवं विद्वत् सम्मेलन, हैदराबाद में सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा तेलंगाना के सयुक्त तत्त्वावधान में 2–4 फरवरी को स्वामी आर्यवेश जी के निर्देशन में राष्ट्रभृत यज्ञ का आयोजन आचार्य सोमदेव शास्त्री के संयोजन में सम्पन्न हुआ। महासम्मेलन वरिष्ठ सन्यासी,आचार्य, बुद्धि जीवी, आर्यनेता, भजनोपदेशक पुरोहित, तीनों सभाओं के प्रधानों द्वारा महर्षि का सपनों का आर्यसमाज बनाने के लिये, इसके गौरवमयी इतिहास के लिये, उसे तेजस्वी स्वरूप प्रदान करने के लिये विचार–विमर्श किये गये। परमात्मा सद्बुद्धि दे ताकि तप, त्याग, संघर्ष से आर्यसमाज पुनः अपना गौरव प्राप्त कर सके। उद्घाटन समारोह में शहीदे आजम भगतसिंह के भतीजे श्री किरंजीत सिंह ने महर्षि दयानन्द सरस्वती व शहीद भगतसिंह के सपनों को साकार करने के लिये आह्वान किया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्मोत्सव

21 फरवरी को दिल्ली सभा व सागरपुर आर्यसमाज के संयुक्त तत्त्वावधान में भव्य भजन संध्या व विद्वानों के सारगर्भित व्याख्यान द्वारा मनाया गया।

24 फरवरी ऋषि बोधोत्सव

- आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के तत्त्वावधान में ऋषिबोधोत्सव बड़े हर्षोल्लास के साथ रामलीला मैदान दिल्ली में मनाया गया।
- 24–25 फरवरी को स्वामी दर्शनानन्द जी द्वारा स्थापित गुरूकुल महाविद्यालय सिकन्दराबाद का भव्य 119 वां वार्षिकोत्सव एवं ऋषि जन्मोत्सव व बोधोत्सव मनाया गया।

26 फरवरी को ऋषि जन्मोत्सव व बोधोत्सव

बड़े हर्षोल्लास के साथ आर्यसमाज नोएड़ा में मनाया गया। जिसमें ऋषि के उपकारों का तथा उनके द्वारा किये समाज–सुधार के कार्यों को स्मरण करते हुये उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित किये गये और जनमानस को प्रसाद वितरण के साथ ऋषि साहित्य वितरण किया गया।

आगामी कार्यक्रम

- 02–12 मार्च से 10 वां बेटी बचाओं अभियान के अन्तर्गत चतुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन स्वामी इन्द्रवेश, टिटोली रोहतक में किया गया।
- 12 मार्च को आर्य परिवार उल्लासमयी होली मंगल मिलन, स्थान – रघुमल आर्य, कन्या सीनियर सैकेण्ड्री स्कूल, कनाट प्लेस में मनाया गया।
- 23 मार्च को राष्ट्र रक्षा यज्ञ व आतंकवाद विरोधी दिवस, शहीद भगतसिंह, राजगुरू, सुखदेव के 86 वें बलिदान दिवस पर के.आ.यु.प. के तत्त्वावधान में जन्तर–मन्तर पर आयोजन किया गया।
- 28 मार्च आर्यसमाज स्थापना दिवस व नव संवत्सर दिल्ली केन्द्रीय सभा द्वारा कमानी ऑडीटोरियम दिल्ली में हर्षोल्लास से मनाया गया।।
- 01–02 अप्रैल एम.डी.एच. वेद रिसर्च फाउडेंशन, कोजीकोड (केरल), के परिसर का उदघाटन व भव्य समारोह होने जा रहा है।
- 02 से 09 अप्रैल क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर वानप्रस्थाश्रम, रोजड़, (साबरकांठा) गुजरात में आयोजित हो रहा है।

–आर्य कै. अशोक गुलाटी

- यदि सुधार हो सकता है तो केवल शिक्षा द्वारा ही हो सकता है।
- शिक्षा सब प्रकार की उन्नति की कुंजी है।

''विश्ववारा संस्कृति'' के नियम व सविनय निवेदन

1. यदि 'विश्ववारा संस्कृति' 15 दिनांक तक नहीं पहुँचती है तो आप प्रधान सम्पादक के नाम से पत्र डालें। पत्र मिलते ही 'विश्ववारा संस्कृति' पुनः भेज दी जायेगी।
2. वार्षिक शुल्क तथा आजीवन शुल्क मनीआर्डर द्वारा आर्यसमाज बी–69, सैक्टर–33, नोएडा के नाम भेजें। वी0पी0 रजिस्ट्री द्वारा नहीं भेजा जायेगा।
3. लेख सम्पादक 'विश्ववारा संस्कृति' के नाम भेजें, लेख छोटे, सरल संक्षिप्त होने चाहिए तथा स्पष्ट, शुद्ध, एवं सुन्दर लेख में कागज के एक ओर लिखे होने चाहिए।
4. 'विश्ववारा संस्कृति' में विज्ञापन भी दिये जाते हैं, परन्तु विज्ञापन शुद्ध एवं वास्तविक वस्तु का ही दिया जायेगा।
5. यह 'विश्ववारा संस्कृति' पत्रिका समाज–सुधार की दृष्टि से मानव कल्याणार्थ निकाली जाती है। इसमें आपको धर्म, यज्ञ कर्म, समाज सुधार, देश व समाज की स्थिति, ब्रह्मचर्य, स्वास्थ्य, योगासन, सदाचार, संस्कार, नैतिकता, वैदिक विचार, शिक्षा आदि एवं अन्य ऐसे विषयों पर लेख पढने को मिलेंगे।
6. 'विश्ववारा संस्कृति' के दस ग्राहक बनाने वाले सज्जन को एक वर्ष तक निःशुल्क 'विश्ववारा संस्कृति, भेजी जायेगी तथा पचास ग्राहक बनाने वाले सज्जन को दो वर्ष निःशुल्क पत्रिका भेजी जायेगी तथा उसका फोटो सहित जीवन–परिचय 'विश्ववारा संस्कृति में निकाला जायेगा।
7. अन्य पत्र–पत्रिकाओं में पहले छपा हुआ लेख 'विश्ववारा संस्कृति' में नहीं छापा जायेगा।
8. अनाधिकृत रूप सं लिए लेख, रचना, कविता के लिए प्रेषक ही उत्तरदायी होंगे।

आर्य कै. अशोक गुलाटी

प्रबन्ध सम्पादक

"विश्ववारा संस्कृति"

आर्य समाज, बी-६६, सेक्टर-३३, नोएडा (उ.प्र.)

संपर्क सूत्र : ०१२०-२५०५७३२, ९८७१७९८२२१, ९५५५७७९५७१

ई–मेल : infoaryasamajnoida33@gmail.com

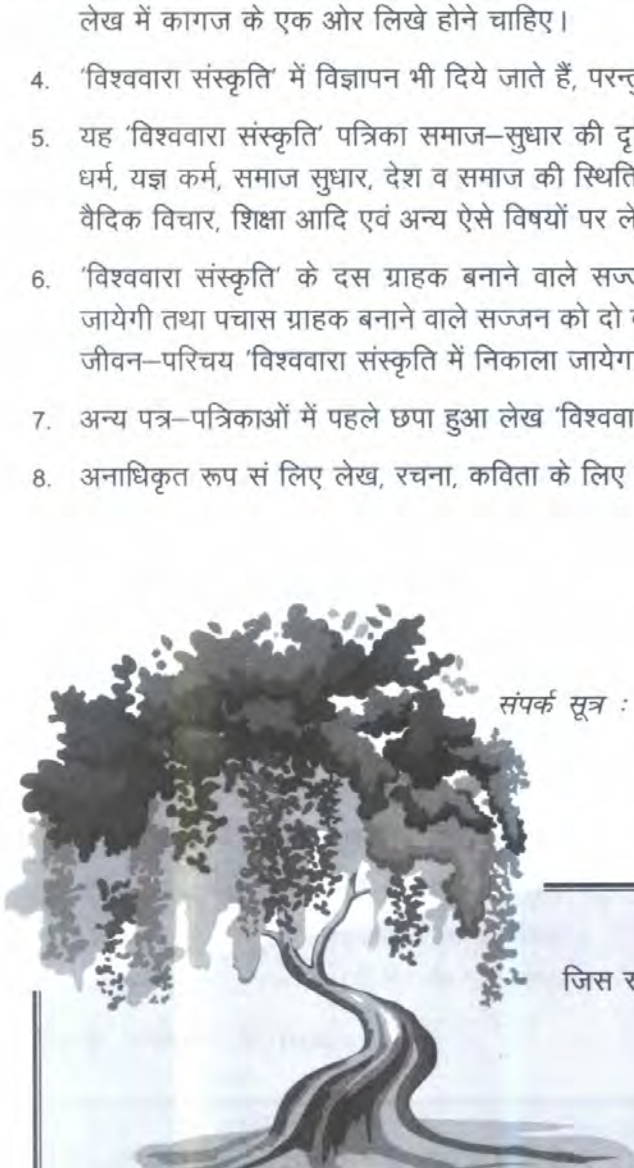

रुपेण गुण पराक्रम वर्जितेन।
जिस रूप में गुण या पराक्रम न हो उस रूप का क्या उपयोग?

लुब्धानां याचको रिपुः।
लोभी मानव को याचक शत्रु जैसा लगता है।

वरं मौनं कार्य न च वचन मुक्तं यदनृतम्।
असत्य वचन बोलने से तो मौन धारण करना अच्छा है।

''विश्ववारा संस्कृति''

1. सभी धार्मिक सामाजिक पत्रों की अपेक्षा अधिक संख्या में प्रकाशित होने वाली पत्रिका।
2. वर्ष में 12 अंक प्राप्त करें ।
3. ''विश्ववारा संस्कृति'' का वार्षिक सदस्यता शुल्क 250 रू0 है। और आजीवन सदस्यता शुल्क 2500 रू0 है।
4. ''विश्ववारा संस्कृति'' का विदेश में वार्षिक सदस्यता शुल्क 3100 रू0 है।
5. लेखक अपने विचार, लेख, कविता आदि प्रकाशन सामग्री प्रत्येक मास की 2–4 तारीख तक भेज दिया करें।
6. जिस मास से शुल्क भेजेंगे तभी से सदस्यता प्रारम्भ होगी।
7. नमूना कॉपी के लिये रू. 20 का धन–आदेश द्वारा अग्रिम भेजें।
8. प्रत्येक पत्र व्यवहार में अपनी सदस्यता संख्या अवश्य लिखें और उत्तर चाहने वाले व्यक्ति दोहरा कार्ड या टिकट भेजें।
9. प्रत्येक पत्र–व्यवहार में अपना पता भी हिन्दी में साफ–साफ लिखा करें।
10. आपके सुझाव अपेक्षित हैं।

प्रधान संपादक : आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार
स्वामित्व : आर्यसाज नोएडा, बी–69 सैक्टर–33, नोएडा 201301
सम्पादन सहयोग : श्रीमति शकुन्तला सेतिया, श्रीमति गायत्री मीना, श्रीमति आदर्श विश्नोई, श्रीमति मधु भसीन

विज्ञापन दर : कवर पृष्ठ 2 व 4 – 5000 रूपये
कवर पृष्ठ 3 – 4000 रूपये
अन्दर पूरा एक पृष्ठ – 3000 रूपये
अन्दर 1/2 पृष्ठ – 2000 रुपये

नोटः पूरे वर्ष (12 अंक) के लिए विज्ञापन देने पर पचास प्रतिशत की छूट दी जायेगी। यह पत्रिका भारत के अनेकों प्रदेशों तथा विदेशों में भेजी जाती हैं। विज्ञापन देकर तथा दिलवाकर लाभ प्राप्त करें तथा पत्रिका को आत्मनिर्भर होनें मे सहयोग प्रदान करें। ''विश्ववारा संस्कृति''में छपे लेखों तथा विचारों से संपादक मंडल का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं हैं। न्याय क्षेत्र उत्तर प्रदेश होगा।

''विश्ववारा संस्कृति'' के सदस्य बनकर सहयोग करें
संरक्षक सदस्य : 5100 रू0
आजीवन सदस्य : 2500 रू0

प्रबन्ध सम्पादक

"विश्ववारा संस्कृति" - सदस्यता आवेदन पत्र

नाम...

उम्र .... दिनांक...

पता...

....

शहर .... राज्य .... पिन कोड ....

फोन.. मोबाइल...

नगद / चैक / मनी आर्डर / डी.डी. संख्या ....

संरक्षक / आजीवन / पंच वर्षीय / वार्षिक सदस्यता हेतु संलग्न है।

चैक मनी आर्डर "आर्य समाज" के नाम भिजवाएं अथवा आप लोग सीधे ही 'यूनाइटेड बैंक ऑफ इण्डिया', नोएडा, सै.–33 में खाता संख्या–1483010100182, **IFSC-UTB10SCN560** में जमा कराकर रसीद की प्रतिलिपि निम्न पते पर भेजें:

प्रबन्ध सम्पादक

"विश्ववारा संस्कृति"

आर्य समाज, बी–69, सेक्टर–33, नोएडा (उ.प्र.)

संपर्क सूत्र: 0120-2505732, 9871798221, 9555779571

ई–मेल: infoaryasamajnoida33@gmail.com

सत्य बोलो, मधुर बोलो

धर्मशास्त्रों में वाणी संयम को क्षेष्ठ तप बताया गया है। धर्माचार्यों और संत–महात्माओं ने भी सदैव सत्य और मृदु वचन बोलने की प्रेरणा दी है। उपनिषदों में कहा गया है, 'तत् सत्ये प्रतिष्ठितम्' यानी ब्रह्म सदा सत्य से प्रतिष्ठित होता है। सत्य पर अटल रहने, वाणी से मृदु–प्रेम भरे वचन उच्चारित करने से मानव सभी को मित्र–हितैषी बनाने में सफल होता है। मनु ने कहा है,

"सत्य ब्रूयात्प्रियं ब्रूयान्न ब्रूयात्सत्यम् प्रियम्,
पियं च नानृतं ब्रूयादेश धर्मः सनातन"

यानी सत्य बोलें, प्रिय बोलें, अप्रिय सत्य न बोलें, प्रिय बोलने में भी असत्य न बोलें–यही शाश्वत धर्म है। वेदों में वचन है, जिह्वा अग्रे मधु मे–अर्थात मेरी जिहवा के अग्रभग पर माधुर्य हो। मैं वाणी से मधुर बोलूं।

गोस्वामी तुलसीदास तो मीठे वचनों को वशीकरण मंत्र बताते हुए कहते हैं, तुलसी मीठे वचन ते, सुख उपजत चहूं ओर वशीकरण एक मंत्र है, "तज दे वनज कठोर"।

आवेश में कठोर वचन बोलकर मनुष्य न केवल दूसरे के ह्रदय को दुख पहंचाने के पाप का भागी बनता है, अपितु पग–पग पर शत्रु पैदा कर लेता है। वाणी से निकले कटु वचन का घाव कभी नहीं भरता। इसीलिए संत कबीरदास ने कहा, "ऐसी वाणी बोलिए, मन का आपा खोय। औरन को शीतल करे, आपाहुं शीतल होय"

इसीलिए सभी विभूतियों ने वाणी के संयम और मधुरता पर बहुत बल दिया है।

गुरुकुल सिकन्दराबाद के वार्षिकोत्सव में उपस्थित ब्रह्मचारी एवं श्रोतागण

गुरुकुल महाविद्यालय सिकन्दराबाद के वार्षिकोत्सव में यज्ञ कराते यज्ञब्रह्मा आचार्य जयेन्द्र कुमार

आर्य समाज राजपुरा (पंजाब) में हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल महामहिम आचार्य देवव्रत जी के साथ आचार्य डॉ.जयेन्द्र कुमार (प्राचार्य) आर्ष गुरुकुल, नोएडा एवं कुलपति आर्ष कन्या गुरुकुल, वेदधाम, सोरखा

प्रेसीडेन्ट सीनियर सिटिज़न में आयोजित कार्यक्रम में आचार्य जयेन्द्र जी का स्वागत करते हुए के.सी. अग्रवाल जी

विश्ववारा संस्कृति

बी-69, सैक्टर-33 नोएडा (उ.प्र.) दूरभाष-2505731

Angkor email: angkor@rediffmail.com